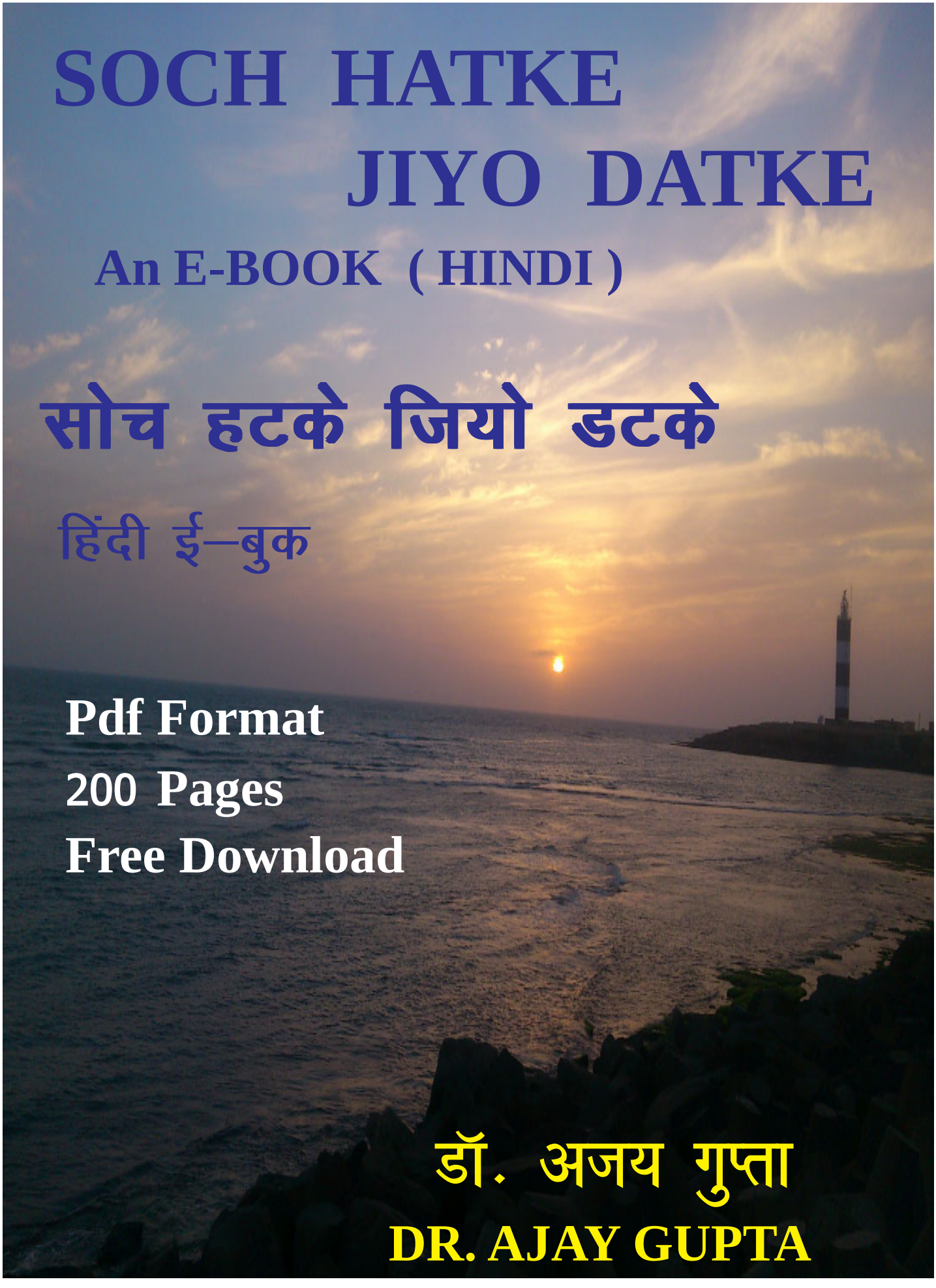
SOCH HATKE
JIYO DATKE
An E-BOOK (HINDI)
सोच हटके जियो डटके
हिंदी ई–बुक
Pdf Format
200 Pages
Free Download
डॉ. अजय गुप्ता
DR. AJAY GUPTA

संग्रहकर्ता

डॉ. अजय गुप्ता

एक्स.एच.एम.ओ.

सेक्टर–9 अस्पताल , भिलाई

चर्म व गुप्त रोग

प्रकाशक

अंजू प्रकाशन

स्टेशन चौक , दुर्ग (छ.ग) भारत

समर्पित

भगवान श्रीकृष्ण के चरणों में

प्रस्तावना

जब मैं इस पुस्तक को प्रकाशित करने का सोचा तो इस पुस्तक के कई नाम मेरे विचार में आये जैसे महान लोगो के महान वचन,महान लोगों की वाणियां, अनमोल वचनों का संग्रह आदि-आदि पर मैनें जब गूगल में सर्च किया मैनें देखा कि यह नाम पहले से ही मौजूद है तो अब समस्या थी कि क्या नाम दूँ तभी मेरे पास एक SMS आया कि उसमें आखरी लाइन थी। THINK हटके, जियो डटके पर यह भी गूगल में था तब मैनें इसका नाम

सोच हटके जियो डटके

रखा यह नाम गूगल में नहीं था परंतु यह नाम मेरे घरवालो को पसंद नही था, जब मैनें इसके बारे में सोचा तो लगा जो लोग अलग ढंग से व अच्छा सोचते है वे ही तो महान होते है यानि

कि सोच हटके और जब आपकी सोच हटके होगी तभी तो आप डट कर जियोगे यानि जियो डटके।

सोच हटके व जियो डटके संग्रह है अनमोल वचनों का इन्हें अनमोल इसलिए कहा जाता है क्योंकि इन्हें आप अपने जीवन में उतार ले तो यह आपके जीवन को अनमोल बना सकता है। इसके अनेको उदाहरण है जैसे- श्री तुलसीदास जी अपनी पत्नी से मिलने गये तो उनके घर पे लटक रहे सांप को रस्सी समझ कर उसके सहारे घर में प्रवेश किया तो पत्नी को कहा जितना प्रेम मुझसे करते हो उतना प्रेम ईश्वर से करोगे तो आपका कल्याण हो जायेगा। उसके बाद उन्होनें रामायण महाकाव्य की रचना की। ठीक इसी तरह मेरे टीचर ने मुझसे एक बार कहा कि तुम पढाई में अच्छे हो पी एम टी की तैयारी करो तो डॉक्टर

बन जाओंगे अगर उनके वचनों को मुझमे ऐसा जादु कि आज मैं सफल डॉक्टर हूँ। ऐसे अनेको उदाहरण हमें आस-पास देखने को मिल जायेंगे। इन अनमोल वचनो को मैं पुस्तक के रूप में प्रकाशित न करके ई बुक (E - BOOK) के रुप में प्रकाशित कर रहा हूँ ताकि यह ज्यादा से ज्यादा लोगो तक पहुंचे और उनके जीवन का कल्याण हो।

इन पुस्तक के अनमोल वचनों को मैने समाचार पत्रों से प्रकाशित किये है इसका उदेश्य रूपया कमाना नहीं है बल्कि आपकी जिंदगी को अनमोल व महान बनाना है क्योंकि यह आपकी सोच को बदलेंगे और आप अच्छे से जी पाओंगे,

यानि सोच हटके, जियो डटके

जय मानवता

डॉ. अजय गुप्ता

आभार

मेरी तीन प्रिंटेड पुस्तके प्रकाशित हो चुकी है–1.एड्स क्यों और कैसे

2.खूबसूरत कैसे बने

3.चर्म रोग व सौंदर्य समस्याएँ।

जिन्हें काफी सराहा गया, कई दिनों से मैनें कोई पुस्तक नही लिखी थी तभी मेरे मित्र डॉ. सतीश राठी ने कहा कि अपने कॉलेज के इस वर्ष 50 वर्ष पूर्ण हो चुके है तो सिल्वर जुबली समारोह जो कि दिसंबर 2013 को होने वाला है, उसके लिए कोई पुस्तक लिखो और मैनें दो पुस्तके WHAT MAKES YOUR LIFE AWESOME AN E-BOOK (ENGLISH) व **'सोच हटके व जियो डटके'** हिंदी ई–बुक तैयार की है, उसकी इस प्रेरणा के लिए धन्यवाद देता हूँ। मैं अपने परिवार के सभी सदस्यों,

क्लीनिक में कार्यरत मेरे स्टॉफ व जिन्होनें इस पुस्तको की टाइपिंग में मदद की है,वे है, कुसुम पटेल, दीपिका पटेल, हिना देवांगन, जानकी यादव, पूर्णिमा शाह, मयूर पाटने व मैं धन्यवाद देता हूँ अपनें 11 वर्षीय छोटे पुत्र का, मेरे पत्रकार मित्र श्री शिवनाथ शुक्ला, श्री रामाराव का, मेडिकल कॉलेज के सभी शिक्षकों का व गोल्डन जुबली कार्यक्रम के आयोंजको व संचालको का। साथ ही कम्प्युटर विशेषज्ञ श्री देवेन्द्र व युवराज तामक्कार, कम्प्युटर के जनक व सोशल साइट के संचालको का व इस पुस्तक के प्रकाशन से प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रुप से जुड़े सभी लोगों को धन्यवाद देता हूँ।

डॉ. अजय गुप्ता

1. यदि आप देखना चाहते है कि बच्चे क्या कर सकते है तो आप उन्हें वे चीजे देना बंद कर दें।

2. एक समाज की नैतिकता का परीक्षण यह है कि वह अपने बच्चों के लिए क्या करता है।

3. अनुसरण करे बिना रुके एक लक्ष्य को लेकर, यही सफलता का रहस्य है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

4. हमारे बच्चे हमे परिवर्तित करते है चाहे वें रहें या ना रहें ।

5. किसी साम्राज्य के निर्माण में हजारो साल लगते हैं लेकिन नष्ट होने में चंद क्षण।

6. यदि हम शांति की कामना करते है तो हमें लोकप्रियता से बचना चाहिए।

7. ईमानदारी मतभेद अक्सर प्रगति की एक स्वस्थ हस्ताक्षर रहे हैं।

8. अनुकूलनशीलता नकली नहीं हैं यह प्रतिरोध और आत्मसात की शक्ति का अर्थ हैं।

9. खड़ी पहाड़ी चढ़ाई के लिए पहला कदम तो धीरे ही उठाना होता हैं।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता. दुर्ग (छ.ग.)

---

10. दोस्त पाने का एक मात्र तरीका है– दोस्त बनो।

11. आप जिस तरह अपना समय व्यवस्थित रखते हैं, उससे आपकी सफलता या असफलता तय होती हैं।

12. व्यक्ति अपनी खुशी का कारीगर होता हैं।

13. अच्छाई एक ऐसा निवेश है जो कभी विफल नही होती।

14. दुनिया में जो है उसकी आप कल्पना कर सकते हैं।

15. आगामी समय में वास्तविक नेता वे ही लोग होंगे जो दूसरों को सस्क्त करेगें।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता. दुर्ग (छ.ग.)

---

16. वास्तव में तथ्य और सच्चाई का आपस में कोई बहुत गहरा रिश्ता नहीं होता।

17. मानव का सच्चा साथी विद्या है जिसके कारण वह विव्दान कहलाता है।

18. नया विचार क्षणभंगुर होता है वह उपहास या जमुहाई भर से नष्ट हो सकता है।

19. स्वास्थ्य सबसे बड़ी दौलत है, संतोङ्ख सबसे बड़ा खजाना है, आत्मविश्वास सबसे बड़ा मित्र।

20. अंधकार से कभी अंधकार को मिटाया नहीं जा सकता, सिर्फ प्रकाश ही ऐसा कर सकता है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

---

21. अपमानित होकर जीने से अच्छा है मरना।

22. सुख और आनंद से इत्र है, जिन्हें जितना अधिक दूसरों पर छिड़केंगे, उतनी ही अधिक सुगंध आपके भीतर समाएगी।

23. कुछ लोग चाहे जितने बूढ़े हो जाए, उनकी सुदंरता नहीं मिटती, वह उनके चेहरो से उतर कर उनके दिलो में आ बसती है।

24. मानव का जन्म सफलता के लिए हुआ है असफलता के लिए नहीं।

25. जीवन की पहली पारी हमारे अभिभावकों से शुरु होती है और दूसरी बच्चों से।

26. जब काम में आनंद आने लगता है तो जीवन खुशहाल हो जाता हैं।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

---

27. अलग अलग नासमझ लोगो के सामूहिक फैसले के भला कोई कैसे महत्वपूर्ण मान सकता है।

28. एक उदारवादी व्यक्ति वह है जो वाद विवाद की स्थिति मे स्वयं का पक्ष नहीं लेता है।

29. किताबें हमारे भीतर स्थित बर्फ के समुद्र के लिए कुल्हाडी की तरह होनी चाहिए।

30. वाणी से बढ़कर चरित्र की निश्चित परिचायिका और कोई चीज नहीं।

31. प्राप्त करने की अपेक्षा दान करना कहीं अधिक सौभाग्य का होता हैं।

32. जो व्यक्ति दुख का सामना करने से डरता है,उसे सुख की आशा नहीं करनी चाहिए।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग (छ.ग.)

---

33. नकल करके कोई आज तक महान नहीं हुआ।

34. आशा अंतिम श्वास तक साथ नहीं छोड़ती।

35. विश्वास में विश्वास अपने में विश्वास ईश्वर में विश्वास यही महानता का रहस्य है।

36. सच्चे मित्र वे है जिनके शरीर दो, पर आत्मा एक होती हैं।

37. जो अपनी तारीफ कराना पसंद करते हैं,उनमें गुणों की कमी होती हैं।

38. असत्य विजयी हो जाए तो उसकी विजय अल्पकालीक होती है

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग (छ.ग.)

---

39. आधा सच पूरे झूठ से ज्यादा खतरनाक हैं।

40. आत्मिक उत्थान के लिए हर पल का उपयोग करें।

41. विचारों के युद्ध में पुस्तकें ही सबसे कारगर हथियार साबित होती है।

42. नीतियों की सफलता के लिए दूरदर्शिता आवश्यक हैं।

43. आप जहां भी जाए पूरे दिल से जाएं।

44. अभी मैं बच्चा हूं कहना,हर चीज जानने के लिए पर्याप्त हैं।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग (छ.ग.)

45. स्वाद की कल्पना के बिना कोई चीज उससे ज्यादा डरावनी नहीं हैं।

46. लोकतंत्र,आजादी और चिराग से निकले जिन्न को वापस बंद नहीं किया जा सकता।

47. जीवन न मनोरंजन स्थल है न ऑसुओं की खान जीवन तो एक सेवा सदन है।

50. प्रत्येक आदमी शरीर रुपी मंदिर का निर्माता होता हैं।

51. हर पीढ़ी पुराने फैशन को हंसता है लेकिन नए धार्मिक तौर पर स्वीकार करती हैं।

52. अच्छी योजना बनाना बुद्धिमानी का काम है पर उसको ठीक से पूरा करना धैर्य और परिश्रम का।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग (छ.ग.)

53. मुठ्ठी भर संकल्पवान लोग जिनकी अपने लक्ष्य में दृढ़ आस्था है, इतिहास की धारा को बदल सकते हैं।

54. यदि हमारी भावना सही नहीं है तो हमारे निर्णय अवश्य गलत होंगे।

55. संक्षेप ही प्रतिभा और बुद्धिमता की आत्मा है।

56. हम एक–एक दिन जैसे गुजारते हैं वैसी ही पूरी जिदंगी गुजरती हैं।

57. सपने हकीकत में बदलते हैं, और फिर हकीकत से नए सपने उगते हैं। इन दोनों की इस आपसी आत्मनिर्भरता से सबसे अच्छी दुनिया बनती हैं।

सोच हटके, जियें डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,(छ.ग.)

---

58. हर बच्चा कलाकार होता है। समस्या एक बार आगे बढ़कर कलाकार बने रहने की हैं।

60. विवेक जीवनी का बेहतर हिस्सा नहीं हैं।

61. संक्षिप्तता बुद्धि की आत्मा हैं।

62. दस मिनटों में जो सीख होती है, उसे बनाने में दस बरस भी लग जाते है।

63. आप कल्पना कर सकते हैं कि हर चीज असली हैं।

64. तजुर्बा ज्ञान का पिता है और स्मरण शक्ति उसकी माता।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,(छ.ग.)

---

65. बिना अनुभव के केवल कोरा शाब्दिक ज्ञान व्यर्थ है।

66. अभिलाषा तभी फल देती है, जब वह दृढ़ निश्चय का रूप धारण कर लेती है।

67. सुंदर वह है जो सुंदर कार्य करे।

68. जिस वस्तु का अस्तित्व ही नहीं है उसे हम कल्पना से उत्पन्न नहीं कर सकते।

69. परमात्मा सत्य है और प्रकाश उसकी छाया।

70. सुधार के बिना पछतावा ऐसा है जैसे छेद बंद किए बिना जहाज से पानी निकालना।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

---

71. कोध मस्तिष्क के दीप को बुझा देता हैं अत एव संकट के समय शांत रहना ही उचित है।

72. जब कोध मस्तिष्क पर अपना शासन जमा लेता है उसी क्षण विचार शक्ति शून्य हो जाती है।

73. जो अपने कोध को अपने ही उपर झेल लेता है वहीं दूसरों के कोध से बच सकता है।

74. जो निश्चित को छोड अनिश्चित के पीछे भागता है वह निश्चित को भी गवां देते है।

75. अनुशासन वह चीज है जिस पर जीवन मर्यादा का समुद्र लहराता हैं।

76. कस्तूरी की पहचान उसकी सुगंध से स्वयं होती है किसी के कहने से नहीं।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

77. एक ईश्वर के अलावा सबकुछ असत्य है।

78. सबसे शानदार बात अपने पर विजय प्राप्त करना, शर्मनाक बात अपने से परास्त होना।

79. केवल युद्ध जीतने वाला ही वीर नहीं वीर वह है जो लोगो के दिलों को जीतता है।

80. दरिद्र व्यक्ति उस धन से कहीं ज्यादा सुखी है जिसे उसका धन काटने को दौडे।

81. जीवन की महत्ता और वेदनाओं और पीडाओं से दुखी होने की अपेक्षा इन्हें हंसते–हंसते सह लेने में हैं।

82. गभीर परिस्थतियां ही महापुरूष का विद्यालय हैं।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

---

83. अति किसी चीज की अच्छी नही होती चाहे वह अच्छा हो या बुरा।

84. जिस तरह आग आपको समाप्त नहीं कर सकती उसी तरह पाप भी पाप का शमन नहीं कर सकता।

85. दूसरो को अच्छे से अच्छा कहिए जिससे वे सचमुच अच्छा बनने का प्रयत्न करें।

86. सौदंर्य के लिए प्रसन्नता से बढकर और कोई श्रृंगार नहीं है।

87. बिरखना विनाश पथ है तो सिमटना निर्माण का।

88. काहिली और मन की पवित्रता एक साथ नही रह सकती।

89. धन खाद की तरह हैजब तक फैलाया न जाए तब तक कम उपयोगी होता है।

90. सफलता वह सीढी है जिस पर हाथ जेब मे डालकर नहीं चढा जा सकता।

91. परिश्रम और आशा ईर्ष्या की सबसे अच्छी दवा है।

92. मनुष्य का युद्ध जब स्वयं से होता है तब उसका कुछ मूल्य होता हैं।

93. दुश्मन के लिए अपनी भट्टी को इतना गरम मत करो वह तुम्हें ही भूनकर रख दे।

94. यदि उददेश्य शुभ न हो तो ज्ञान भी पाप हो जाता है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

95. अहंकार मनुष्य को दुष्ट बना देता है जबकि नम्रता देवदूत।

96. संगति के अनुरूप ही व्यक्ति अथवा वस्तु में परिवर्तन आता हैं।

97. जिस परिवार में नर–नारी में कलह नहीं होती वहां लक्ष्मी स्वयं विराजमान होती है।

98 कभी–कभी मौन रह जाना सबसे तीखी आलोचना होती है।

99. यदि सर्वोच्च शिखर पर पहुचने के आकांक्षी हो तो सबसे नीचे से चढना शरू करें।

100. स्वच्छता और परिश्रम मनुष्य के सर्वोच्च वैद्य है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

101. ढोंगी बनने की अपेक्षा स्पष्ट रूप से नास्तिक बनना बेहतर हैं।

102. मनुष्य का मापदंढ उसकी संपदा नहीं अपितु उसकी बुद्धिमता हैं।

103. अवगुण नाव के पेंदेमें छिद्र के समान है जो एक न एक दिन नाव को डुबा ही देगा।

104. ठग किसी संबंघ का ख्याल नही करते, वे सभी को ठग लेते हैं।

105. स्वर्ग मे मुक्ति का आनंद इसी जीवन मे संभव है।

106. प्रकृति, समय और धैर्य ये तीन हर दर्द की दवा है।

107. शिक्षा की जड़े भले ही कड़वी हो, इसके फल मीठे होते है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

108. सच्चा सुख वैभव प्रदर्शन मे नही बल्कि त्याग मे है।

109. किसी के गुणो का स्मरण करो पापो का नही।

110. ऐसे लोगो से दोस्ती बढ़ाए ,जिनसे बाते करके आपको खुशी मिलती हैं।

111. मनोबल मजबूत हो तो समय पर निर्णय लियाजा सकता है।

112. जो आदमी मुसीबत मे साथ न दे वह दुश्मन है, उससे दूर रहना ही अच्छा है।

113. दरिद्रता सब पापो की जननी है तथा लोभ उसकी सबसे बड़ी संतान है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

114. समस्याओ से दुखी होने के बजाय उसे हल करने की आदत डाले।

115. जगत का कर्ता सब जगह और सब प्राणी मात्र मे मौजूद है।

116. जहॉ आदर और विश्वास मिले वहॉ आशक्ति बनाना बुरा हैं।

117. अपने गुण कर्म व स्वभाव का विश्लेषण करना कठिन कार्य हैं।

118. विचारो से सुधरा हुआ मनुष्य देवता कहलाता है।

119. परोपकार मे लगे हुए लोगो के लिए कोई भी कार्य दुर्लभ नही है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

---

120. जिसने एक बार धोखा दे दिया हो, उसका विश्वास नही करना।

121. जिज्ञासा तेज बुद्धि का एक स्थायी और निश्चित गुण है।

122. ईश्वरी न्याय की चक्की यद्यपि धीमी गति से चलती है लेकिन चलती अवश्य है।

123. धारा की दिशा मे तो सव भी बहता है किंतु धारा के विरुध्द तैरना ही जीवन का प्रमाण है।

124. ज्ञानी वह है जो वर्तमान को ठिक से समझकर परिस्थिति के अनुसार आचरण करे ।

125. यदि हमारी भावना सही नही है तो हमाारे निर्णय अवश्य गलत होंगें।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग छ.ग.

---

126. उधार वह मेहमान है, जो एक बार आकर जाने का नाम नहीं लेता।

127. बुराई के अवसर दिन में सौ बार आते है लेकिन भलाई के अवसर वर्ष में एक बार ही आता है।

128. ज्ञान ही परम मित्र है और अज्ञान मनुष्य का परम शत्रु हैं।

129. व्यवहार कुशलता सबसे बढ़कर है जो इसमें प्रवीणता हासिल करते है वे कुरूप होते हुए भी सुंदर होते है।

130. अपरिचितो के लिए अपनी सुख–सुविधाओ का परित्याग करे तथा उस त्याग में आनंद का अनुभव करे।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

131. राजनीति अब अच्छे लोगो के लिए नही रही है वह धूर्तो की अंतिम शरण स्थली बन गई है।

132. मन की पवित्रता शरीर की पवित्रता से अधिक आवश्यक है।

133. जो अमृतवाणी बोलते है उनके नेत्र विनय से झुके होते है।

134. समाज में उस मनुष्य के लिए कोई जगह नहीं है जो उदास खिन्न और निराश हो।

135. अपने आचरण व विचारो को कर्तव्य धर्म से नियंत्रित करो।

सोंच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग छ.ग.

---

136. जब तक तुम्हारे पास कहने के लिए कुछ खास न हो तब तक किसी से भी कुछ न कहो।

137. मकर–संकांति उत्तरायण का पर्व है. उत्तरायण का मतलब है आगे बढ़ना,बढा होना।

138. यदि मन पवित्र और विचार शुद्ध हो तो तुम जो भी करोगे वह शुभ ही होगा।

139. सच्चा गुरू वहां पहुंचा देता है जहां शिष्य अपने पुरूषार्थ से कभी नही पहुंच सकता।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

140. श्रद्धा छोटी उपासना से शुरू होती है और अंत जीवन को महान बना देती है।

141. सादगी का सिद्धांत न केवल व्यक्तिगत जीवन में उपयोगी है वरन सामाजिक सुव्यवस्था के लिए भी जरूरी है।

142. राजनीति मे घात–प्रतिघात होना सामान्य बात है।

143. मस्तिष्क को सीखने की प्राकिया में कभी भी थकान का अनुभव नहीं होता।

144. लोगों के गुण अवगुण ही देखते रहेंगें तो सारी जिदंगी ईर्श्या में ही बीत जाएगी।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

---

145. बोलने के समय चुप रहना और चुप रहने के समय बोलना दोनों ही बातें उचित नहीं।

146. एक शेर को भी मक्खियों से अपनी रक्षा करनी पडती हैं।

147. शांति, स्वाधिनता व प्रेम इंसान के जीवन में जरूरी।

148. जो निश्चित को छोड अनिश्चित के पीछे भागता है वह निश्चित को भी गवां देता हैं।

149. चितां करना व्यर्थ है चितां से रूप बल और ज्ञान का नाश हो जाता है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

150. कार्यकुशल व्यक्ति के लिए धन और यश की कोई कमी नहीं होती।

151. ज्ञानी वह है जो वर्तमान को ठीक से समझकर परिस्थिति के अनुसार आचरण करें।

152. आजतक कोई भी व्यक्ति अनुकरण मात्र से महान नहीं बना।

153. यशपूर्ण जीवन का एक व्यस्त घंटा कीर्तिरहित युगों से कहीं अधिक है।

154. अपराध करने के बाद जो डर पैदा होता है वहीं अपराधी का दंड है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग छ.ग.

---

155. आशा जीवन का लंगर है उसका सहारा छोडने से आदमी भवसागर में बह जाता है।

156. बच्चे वे चमकते हुए तारे है जो ईश्वर के हाथों से छूटकर धरती पर आ गिरे है।

157. शुद्ध हृदय से निकला हुआ वचन कभी निष्फल नहीं होता।

158. जिसके पास खाने पीने को है उसका कोई क्या बिगाड़ लेगा अर्थात धनी का कोई कुछ नही बिगाड़ पाता है।

159. मन को हर्ड्ढ और उल्लासमय बनाना चाहिए, इससे हजारों हानियों सें बच सकेगें और लम्बी उम्र पायेगें।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

160. परिस्थितियां मानव नियंत्रण से बाहर हो सकती है, लेकिन हमारा आचरण तो हमारे ही नियंत्रण है।

161. समय के उपर कर्म कभी भी नही छोडना चाहिए, कर्म करते रहेगें तो समय भी आपके अनुकूल रहेगा।

162. लोभ को अभी जीतने का प्रयास करें क्योंकि 'मानव जब बूढो भयो, तृश्णा भई जवान'।

163. कविता गाकर रिझाने के लिए नही समझ कर खो जाने के लिए है।

164. स्त्री कभी भी पति की दौलत के कारण सुखी या दुखी नही होती उसका सुख या दुख की योग्यता और चरित्र पर निर्भर करता है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

165. दुनिया में एकता नही है और दुनिया बिखरी पडी है क्योंकि इंसान अपने भीतर बिखरे हुए है।

166. सारा हिन्दुस्तान गुलामी में घिरा हुआ नही है जिन्होनें पच्श्रिमी शिक्षा पाई है और जो उसके पास में फॅस गए है वे ही गुलामी में घिरे हुए है।

167. न्याय का आधार सत्य होना चाहिए, न कि पूर्वाग्रह।

168. विचारवान लोगो का एक छोटा सा समूह पूरी दुनिया को बदलने की ताकत रखता है।

169. अनुभव व्यक्ति की सबसे बड़ी कमाई होती है, जो रुपए की बात करते है वे मूर्ख होते है।

170. जिस काम को करने मे डर लगता है, उस काम को करने का नाम ही साहस है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

---

171. मूर्ति के समान मनुष्य का जीवन सभी ओर से सुंदर होना चाहिए ।

172. अपनी गलतियो को ही हम अनुभव का नाम देते है।

173. किसी एक विचार को अपने जीवन का लक्ष्य बनाओं। उसी के बारे में सोचो और काम करों, तुम पाओगे कि सफलता तुम्हारा कदम चूम रही है।

174. जो व्यक्ति चरित्र से गिर गया, वह लाख कोशिशो के बाद भी लोगो का विश्वासपात्र कभी नही हो सकता।

175. कभी न कभी बुद्धिमानो की परख होती है, इसलिए हिम्मत न हारे।

176. जो व्यक्ति वादा करते है लेकिन समय गुजरने के बाद भी निभाते नही उन पर भरोसा करना स्वयं को धोखा देना है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

---

177. परोपकार कभी व्यर्थ नही जाता।

178. धैर्य व परिश्रम से हम वह प्राप्त कर सकते हैं, जो शक्ति व जल्दबाजी में नहीं।

179. लोगों में खुद को खराब कहने की हिम्मत नहीं।

180. जो धैर्य रखता है उनकी हमेशा जीत होती है।

181. स्वार्थ अपने को पराया बना देता है।

182. कलाकार प्रकृति का प्रेमी है अतःवह उसका दास भी है और स्वामी।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

183. वाणी चॉदी है, मौन सोना है, वाणी पार्थिव है पर मौन दिव्य हैं।

184. बुरा व्यक्ति उस समय और भी बुरा हो जाता है जब वह अच्छा होने का ढोंग करता है।

185. धैर्य प्रतिभा का आवश्यक तत्व है।

186. समस्या को उलझाने की बजाय उसका निदान करें।

187. साफ–सुथरे सादे परिधान में ऐसा यौवन होता है जिसमें अधिक उम्र छिप जाती हैं।

188. हृदय–परिवर्तन आत्मबल से ही संभव हैं।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

189. असफलता परिश्रम का संकेत देकर सफलता का मार्ग प्रशस्त करती हैं।

190. धर्म केवल चिंतन नहीं, चिंतन के साथ आचरण भी हैं।

191. इंसान वही बनता है, जो मां उसे बनाती हैं।

192. आत्मा को परमात्मा में लीन करता है वही सर्वगुण संपन्न सर्वोपरि आत्मज्ञानी हैं।

193. सदविचारों से ही व्यक्ति प्रगति करता हैं।

194. सत्य को झुठलाना आत्म प्रवंचना के अलावा कुछ नहीं हैं।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग, छ.ग.

195. शासक सदैव कर्मठ एवं न्यायप्रिय होना चाहिए।

196. अपनी सुप्त शक्तियों को पहचान कर ही प्रगति की जा सकती हैं।

197. शत्रु का लोहा भले ही गर्म हो जाए, पर हथौड़ा तो ठंडा रहकर ही काम दे सकता हैं।

198. बुद्धिमान व्यक्ति को जितने अवसर मिलते है उससे अधिक वह स्वयं बनता हैं।

199. कोध बुद्धि को घर से बाहर निकाल देता है और दरवाजे पर चटकनी लगा देता हैं।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

200. जिसे तुम नहीं समझते, उससे नफरत या उसका विरोध मत करो।

201. कोध से शुरु होने वाली हर बात लज्जा पर समाप्त होती हैं।

202. अपने आचरण व विचार को कर्तव्य धर्म से नियंत्रित करो।

203. सच बोलने का सबसे बड़ा फायदा यह है कि आपको यह याद नहीं रखना पड़ता है कि किससे क्या कहा था।

204. जनतंत्र में एक मतदाता का अज्ञान सबकी सुरक्षा को संकट में डाल सकता हैं।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

---

205. जिसे हारने का डर है,उसकी हार निश्चित हैं।

206. व्यवहार कुशलता सबसे बढकर है जो इसमें प्रवीणता हासिल करते है वे कुरूप होते हुए भी सुंदर लगते है।

207. आतंक के बल पर भय कायम किया जा सकता है समाज सुधार कदापि नही।

208. जिस तरह उबलते हुए जल में हम अपना प्रतिबिंब नहीं देख सकते, उसी तरह कोध की अवस्था में यह नहीं समझ पाते कि हमारी भलाई किस बात में हैं।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

209. सादगी का सिद्धांत न केवल व्यक्तिगत जीवन में उपयोगी है वरन् सामाजिक सुव्यवस्था के लिए भी जरूरी है।

210. प्रसन्नता कोई पहले से निर्मित वस्तु नहीं है वो आपके कर्मो से आती है।

211. जीवन की त्रासदी यह नही है कि आप लक्ष्य तक नही पहुँच पाए।

212. समाज में उस मनुष्य के लिए कोई जगह नहीं है जो उदास खिन्न और निराश हो।

213. दूसरों के दूर्भाग्य से बुद्धिमान व्यक्ति यह शिक्षा ग्रहण करते है कि उन्हें किस बात से बचना चाहिए।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

214. वास्तव में की कसौटी तो यह है कि व्यक्ति अपरिचितों के लिए अपनी सुख सुविधाओं का परित्याग करें तथा उस त्याग में आनंद का अनुभव करें।

215. राजनीति अब अच्छे लोग के लिए नहीं रही वह धूर्तों की अंतिम शरण स्थली बन गई हैं।

216. आस्था वह पक्षी है जो अंधेरा होने पर भी उजाले को महसूस करती है।

217. छोटी मोटी समस्याओं से विचलित न हो आत्मविश्वास के साथ शिखर पर दृश्टि रखे आपकी सफलता को कोई नही रोक सकता।

218. उस आस्था का कोई मूल्य नहीं, जिसे आचरण में न लाया जा सके।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

219. ज्ञान का पहला और अंतिम लक्ष्य चरित्र निर्माण है।

220. जैसे जल के व्दारा अग्नि को शांत किया जाता है, वैसे ही ज्ञान से मन को शांत रखना चाहिए।

221. नमस्कार करना एक वैज्ञानिक पद्धति है, जहां जुडे हुए हाथ और चरणों में झुका हुआ माथा सकारात्मक उर्जा प्राप्त करता है।

222. कामनाएं समुद्र की भांति अतृप्त है, पूर्ति का प्रयास करने पर उनका कोलाहल और बढता है।

223. जब तक आंतरिक दीपक का प्रकाश प्रज्जवलित नहीं होगा भ्रमजाल से मुक्ति नही पा सकते यह प्रकाश संतों के सत्संग से मिलता है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

224. चित में उत्साह और प्रसन्नता हो तो व्यक्ति हर कठिनाइयों का समाधान कर सकता है।

225. प्रार्थना का एक उद्येश्य है, हम मन की मलिनताओं को साफ कर डाले और स्वच्छ बन जायें।

226. जीवन शाश्वत प्रवाह है, इसमें निरंतरता है, अमरता है, यह किसी भी बाधा, व्यवधान या विघटन से रहित है।

227. अगर बुराई को व्यक्ति कल पर टाले और अच्छाई को आज पर केन्द्रित करे तो जीवन की दिशा ही बदल जाती है।

228. संसार में न कुछ भला है और न बुरा केवल हमारे विचार ही उसे भला या बुरा बना देती है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

229. मस्तिष्क के लिए अध्ययन की उतनी ही आवश्यकता है, जितनी शरीर को व्यायाम की।

230. धन से आज तक किसी को खुशी नही मिली और न ही मिलेगी। जितना अधिक व्यक्ति के पास धन होता है, वह उससे कहीं अधिक चाहता है। धन रिक्त स्थान को भरने के बजाय शून्यता को पैदा करता है।

231. अध्ययन हमें आनंद प्रदान करता है अलंकृत करता है और योग्यता प्रदान करता है।

232. व्यक्ति की शालीनता और व्यवहार उसके संस्कारों को दर्शाता है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

233. शास्त्रों को पढने की बजाए उसे आचरण में उतारने से जो ज्ञान प्राप्त होता है वह हरि से मिला देता है।

234. घृणा करना शैतान का काम है क्षमा मनुष्य का धर्म है और प्रेम करना देवताओं का गुण है।

235. जो दूसरों की तकलीफ में सहायता करते है वे ही वास्तव में महान है।

236. संसार मे बंधनो की कमी नही है किन्तु प्रेम का बंधन सबसे दृढ बंधन है. प्रेमवश प्राणी बेबस हो जाता है।

237. प्रतिज्ञा के बिना जीवन उसी तरह है जैसे लगंर के बिना नाव या रेत पर बना महल।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

238. लोगो के साथ सामंजस्य स्थापित कर पाना ही सफलता का एक अति महत्वपूर्ण सूत्र हैं।

239. इस संसार में उन्नति करने का अवसर ईश्वर सबको एक बार जरूर देता हैं।

240. मन में कभी बुरे विचार मत आने दो वह अपना असर दिखाए बिना नही रहते हैं।

241. धर्म की क्षति जिस अनुपात से होती है, उसी अनुपात से आडम्बर की वृध्दि होती हैं।

242. जिदंगी का असली आनंद वैभव मे नही आंतरिक प्रसन्नता मे हैं।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

243. युध्द मानव समाज का विनाशक है अतः उससे बचने के सभी उपाय काम मे लिए जाते हैं।

244. प्रफुल्लित व उत्साहित मन से जीवन एवं समाज में रचनात्मकता व सृजनात्मकता का पथ प्रशस्त होता हैं।

245. प्रतिभा वह करती है जो उसे करना है और बुध्दि वह करती है जो वह कर पाती हैं।

246. ईश्वर अचल शक्ति है, उसका विश्व कभी अराजक नहीं हो सकता।

247. दुनिया मे प्रसन्न रहने का एक ही उपाय है और वह यह है की अपनी जरूरतें कम करों।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

248. जहां व्यक्ति का मिथ्या अहंकार समाप्त हो जाता है वहीं से उसकी गरिमा प्रारंभ होती हैं।

249. कूरता का उत्तर कूरता से देने का अर्थ अपने नैतिक व बौध्दिक पतन को स्वीकार करना हैं।

250. बातचीत प्रिय हो, पर ओछी ना हो, विद्वतापूर्ण हो, पर दंभयुक्त ना हो, अनोखी हो, पर असत्य न हो।

251. किसी भी देश व समाज में मनाये जाने वाले तीज–त्यौहार उस देश के संस्कृति के प्रतीक होते हैं।

252. जिसकी तुम आकांक्षा करते हो यदि वह करना सभंव नहीं, तो उसी की आकांक्षा करो जो तुम कर सकते हो।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

253. असफलता यह सिध्द करती है कि सफलता का प्रयास पूरे मन से नहीं हुआ।

254. संकट काल में जो घबराते नहीं और धैर्य रखते हैं वे ही प्रगति करते हैं।

255. माता–पिता के समान सुख देने वाली केवल उत्तम विद्या ही हैं।

256. चरित्र और शैक्षणिक सुविधाएं ही वह पूंजी है जो माता–पिता अपनी संतान में समान रूप से स्थानांतरित कर सकते हैं।

257. युवा नियमों को जानते हैं, लेकिन वृद्ध अपवादों को जानता है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

258. कभी–कभी उन लोगों से भी शिक्षा मिलती है, जिन्हें हम अभिमानवश अज्ञानी समझते हैं।

259. महान विचार केवल विचारशील व्यक्ति की समझ मे आते है लेकिन महान कर्म समस्त मानवता को समझ आते है।

260. दुनिया में सबसे सुदंर चीजो को देखना तो दूर छुआ भी नही जा सकता उन्हें तो दिल से महसूस किया जाना चाहिए।

261. अनुभव यह नही जो मनुष्य के साथ घटता है बल्कि घटे हुए हमारी क्या प्रतिकिया होती है यह अनुभव है।

262. सबसे प्रेम का बर्ताव करें कुछ एक पर भरोसा करें और किसी का बुरा न करें।

सोच हटके, जियो डटके

डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

---

263. जिस मनुष्य की अपनी बुद्धि नहीं होती उसके लिए शास्त्र वैसे ही व्यर्थ है जैसे अंधे के लिए दर्पण व्यर्थ होता है।

264. हृदय का निवेदन ही सच्ची पूजा है उपवास करने और चिल्ला कर कीर्तन करने का नाम पूजा नहीं।

265. अच्छे कार्य जब कार्य रूप में परिणित हो जाते है तब महान कृतियां बन जाती है।

266. धन को बर्बाद करें तो आप केवल निर्धन होते है लेकिन समय को बर्बाद करते है तो आप जीवन का एक अहंम् हिस्सा गवां देते है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

267. सच्ची महानता हृदय की पवित्रता में है इसमें नहीं की कोई तुम्हारे बारे में क्या कहता है।

268. महान नेताओं में कुछ ऐसे गुण होते है जो संर्पूण राष्ट् को प्रेरणा देते है, वे अच्छे कार्य के लिए प्रेरित करते है।

269. राजनीति कुछ व्यक्तियों के लिए लाभार्थ है अनेक व्यक्तियों का उन्माद है।

270. एकांत सकारात्मक हो तो उसमे चिंतन चेतना और व्यक्तित्व परिपक्व होता है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

271. पराजय से सत्याग्रही को निराशा नहीं होती बल्कि कार्यक्षमता और लगन बढती है।

272. जो व्यक्ति दूसरों की भलाई चाहता है वह अपनी भलाई सुनिश्चित कर लेता है।

273. ज्ञान ही सबसे बडी अच्छाई है अज्ञानता ही सबसे बडी बुराई है।

274. भय,कोध,घृणा, और ईश्र्या जैसे मनोविकारो से छुटकारा पाकर शरीर व मन को स्वस्थ रखा जा सकता है।

275. सुखी रहने के लिए संपदायें नहीं विभूतियां आवश्यक है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

276. दूसरो को खुशी देनेवाला ही खुशहाल होता है अपने से जुडे हर छोटे बड़े को अपने व्यवहार से खुश करने की आदत डालो।

277. शिष्टता का प्रभाव बहुत दूर तक जाता है और सबसे अच्छी बात तो यह है कि इसमें कुछ खर्च भी नहीं करना पडता ।

278. लोभी न परमार्थ को समझता है और न धर्म को।

279. इतने भगवान और इतने धर्म और इतनी घुमावदार राहें सिर्फ करूणा की कला की जरूरत है इस दुखी संसार को।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

280. न्याय में विलंब का अर्थ, न्याय से वंचित करना होना।

281. आत्मा को छोडकर जाने के बाद शरीर पंचतत्व में विलीन हो जाता है इसलिए शरीर के लिए शोक करना उचित नहीं।

282. भगवान जाति से नहीं बल्कि भक्ति से प्रसन्न होते है।

283. पछतावा हृदय की वेदना है और निर्मल जीवन का उदय।

284. अच्छे विचारों में सदैव सकारात्मक संभावनाए छिपी होती है।

285. एकता का किला सबसे सुदृढ़ होता है। उसके भीतर रह कर कोई भी प्राणी असुरक्षा अनुभव नहीं करत।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

286. ईमानदारी के वस्त्र ओढ़कर ही बेईमानी इस दुनिया में चल पाती है।

287. भूल करना मनुष्य का स्वभाव है की भूल हुई को स्वीकार कर लेना एवं वैसी भूल फिर न करने का प्रयास करना वीर एवं साहसी होने का प्रतीक है।

288. जीवन में दुखद बात यह है कि हम बड़े तो जल्दी हो जाते है, लेकिन समझदार देर से होते हैं।

289. अच्छे मूल्यों वाली शिक्षा सिर्फ एक अच्छा इंसान ही नहीं बनाती, बल्कि बेहतर समाज और फिर देश का निर्माण भी करती हैं।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

290. अपनी कद्र करना चाहते हो तो अपनी वाणी की कद्र करना सीखो। कम बोलो, काम का बोलो।

291. जिस समय कोध उत्पन्न होने वाला हो, उस समय उसके परिणामों पर विचार करो।

292. ज्ञान में प्रेम छिपा है और प्रेम ही जीवन का आधार है अतःज्ञान प्रेम का ही पर्याय है।

293. अच्छी किताब जादुई कालीन की तरह हमें उस दुनिया की सैर कराती है, जहां हम अन्य किसी माध्यम से प्रवेश नहीं कर सकते।

294. जीवन में त्याग व्यक्ति की महानुभावता को उभारता है और दुख से छुटकारा पाने में उसकी मदद करता हैं।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

---

295. निर्धनता में भी खुश रहने वाला व्यक्ति निर्धन नहीं होता।

296. चिंताएं लेकर बिस्तर पर जाना अपनी पीठ पर गठरी लेकर सोने के समान हैं।

297. जो मनुष्य अपने कोध को अपने ही उपर झेल लेता है वह दूसरों के कोध से बच सकता है।

298. कला विचार को मूर्ति में परिवर्तित कर देती हैं।

299. थोड़ा सा अभ्यास बहुत सारे उपदेशों से बेहतर हैं।

230. स्वयं डरा हुआ व्यक्ति दूसरों को भी डरा देता हैं।

231. सभी के साथ सौम्य और अपने लिए कठोर रहिए।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

---

332. बिना गुरु के ज्ञान नही होता।

333. जिज्ञासा के बिना ज्ञान नही होता।

334. विद्या से निर, क्षीर, विवेक की प्रवृति उभरती है और व्यक्ति परिश्कृत होता है।

335. गलतियो से न सिखना ही एकमात्र गलती होती हैं।

336. रोटी कि कीमत उससे जानों, जो दिन भर भूखा हो।

337. अति किसी चीज की अच्छी नही होती, अंततः इससे तकलीफ ही होती है।

338. अपमानित होकर जीने से अच्छा है मरना।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

---

339. प्रत्येक दिन का मूल्यांकन आपने जो फसल उस दिन काटी है उससे नही बल्कि जो बीज बोए है उसके आधार पर कीजिए।

340. किसी के साथ आपके किसी संबंध रहे उसका यह मतलब कहीं नही कि उनके साथ भविश्य में भी आपके संबंध हो।

341. नरम शब्दो से सख्त दिलो को जीता जा सकता हैं।

342. हर इंसान मे कुछ में कुछ खूबिया होती है, बस कुछ लोग अपने अंदर नही झाकते।

342. प्रेम करने का कोई तरीका नही है पर प्रेम करना सबको आता है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

---

343. ज्ञान ही एक मात्र अच्छाई है और अज्ञानता एक मात्र बुराई।

344. सत्य कभी भी ऐसे कारण को क्षति नहीं पहुंचता जो उचित हो।

345. हम जिस चीज की तलाश कही और कर रहे होते है, हो सकता है कि वह हमारे पास ही हो।

346. केवल विश्वास ही एक ऐसा संबल है जो हमें मंजिल तक पहुचाता हैं।

347. दूसरो से तुलना किये बिना अपना जीवनयापन करो यही परम संतोष हैं।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

---

348. अगर तुम गलतियों को रोकनें के लिए दरवाजे बंद कर दोगे तो सत्य भी बाहर ही रह जाएगा।

349. सरल होना चाहिए पर मूर्ख नही सरलता का बेजा फायदा उठाने वालो पर कड़ाई भी जरुरी है।

350. हम अगर किसी चीज की कल्पना कर सकते है, तो उसे साकार भी कर सकते है।

351. यदि हम जीवन में सुख शांति और समृद्धि चाहते है तो व्यवस्थित रूप से व्यस्त रहना सीखे जीवन जीने की कला का मूल सिद्धांत है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

352. नियमो का निर्माण मनुष्य के लिए किया गया है मनुष्य का निर्माण नियम के लिए नही हुआ हैं।

353. अच्छे कार्यो को सोचते ही नहीं रहीए, उन्हें सारे दिन कीजिए ताकि जीवन एक भव्य मधुर गीत बन जाए।

354. खुश रहना और संतुष्ट रहना सौदंर्य युवा बने रहने के लिए श्रेष्ठ तरीके है।

355. महान कवि हों इसके लिए यह ज्यादा जरूरी है कि आप अच्छे श्रोता भी हो।

356. असंभव दिखने वाले काम संभव हो जाते हैं।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

357. हमेशा आगे बढते रहने और विश्वास करने से कठिनाई दूर हो जाती है और दिखाई देने वाली असंभवता नष्ट हो जाती है।

358. जो कुछ काम आज कर सकते हो उसे कल के भरोसे पर कभी मत छोडो।

359. कर्म को स्वार्थ की ओर से परमार्थ की ओर ले जाना ही मुक्ति है, कर्म का त्याग मुक्ति नहीं है।

360. मित्रता करने मे धीमें रहिए पर जब कर लें तो उसे मजबूती से निभाइए और उस पर स्थिर रहिए।

361. विवेक के मामलों में बहुमत के नियम का कोई स्थान नहीं।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

362. जब आप कुछ गवां बैठते है तो उससे प्राप्त शिक्षा को न गवांए।

363. ज्ञान वह जो अंतः की समृद्धि बढाए गुण–कर्म व स्वभाव का परिष्कार करें।

364. अपनी गलतियों के लिए दूसरों को दोष देना उचित नहीं त्रुटियां सुधार कर काबिलियत सिद्ध करना चाहिए।

365. ज्ञान के साथ विवेक को पुष्ट करते रहें ताकि भविष्य की प्रत्येक सीढी सफलतापूर्वक चढ सकें।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

366. हंसी के क्षणों के बिना बीता दिन सबसे खराब दिन है।

367. ज्ञान स्वयं की आंख हैं, इसका कोई विकल्प नहीं है, यह असहाय मनुष्य का सहारा है।

368. छोटी वस्तुओं की अपेक्षा बडी वस्तुओं का त्याग असली त्याग है।

369. ज्ञानी वह है जो वर्तमान को ठीक प्रकार समझ सके और परिस्थितियों के अनुसार आचरण करें।

370. ईमानदारी बरगद के पेड के समान है, जो देर से बढ़ती किन्तु चिरस्थायी रहती है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

371. मनुष्य में जो संपूर्णता गुप्त रूप से विद्यमान है उसे प्रत्यक्ष करना ही शिक्षा का कार्य है।

372. कभी भी किसी का उपहास नहीं करना चाहिए पता नहीं कब और कौन ईश्वर का कृपापात्र बन जाए।

373. कानून निर्धनों पर शासन करता है और धनी कानून पर शासन करता है।

374. प्रतिभा परिष्कार के चार सिद्धांत है, 'गीता' के सिद्धांतों पर चलकर ये संपादित किये जाते हैं, श्री कृष्ण ने अर्जुन को इसी में निष्णात बनाया था।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

375. मृत्यु भय ही सबसे बडा भय है आत्मज्ञान व्दारा उससे छुटकारा मिल सकता है।

376. ऐसा छात्र जो प्रश्न पूछता है, वह पांच मिनट के लिए ही मूर्ख रहता है लेकिन जो पूछता नहीं, वह जिंदगी भर मूर्ख ही रहता है।

377. जीवन का उत्तम उपयोग है इसे ऐसा कुछ करने में बिताना जो इससे अधिक स्थायी हो।

378. अध्यापक मार्गदर्शक का काम करते हैं। चलना आपको स्वयं ही पडता है।

379. यदि हर कार्य को यह समझकर किया जाए कि ईश्वर मेरे साथ है तो असंभव कार्य भी संभव हो जाएगा।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

380. किसी के गुणों की प्रशंसा करने में अपना समय नष्ट मत करो, उसके गुणों को अपनाने का प्रयत्न करो।

381. शरीर में स्फूर्ति, आंखों में चमक और चेहरे में मुस्कान यह जीवट व्यक्ति का परिचय है।

382. सदविचारों से ही जीवन सुखमय होता है, विकृत चिन्तन के रहते सफलता की उम्मीद नहीं करना चाहिए।

383. धैर्य व सयंम से हम वह प्राप्त कर सकते हैं जो शक्ति व जल्दबाजी में नही।

384. धैर्य और आंनद ऐसे इत्र हैं जिन्हें जितना छिडकोगे उतनी ही अधिक सुगंध आपके अंदर समायेगी।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

385. हमारी महानता विशालता कभी भी न गिरने में नहीं बल्कि गिरने पर हर बार फिर उठ जाने में निहित है।

386. जो मनुष्य जान–बूझकर अपने मित्र को धोखा देता है वह अपने ईश्वर को धोखा देता है।

387. मूर्ख के पांच लक्षण होत हैं, इनमें गर्व करना, आपस में लडवाना, दुर्वचन बोलना, हठ करना व वचन का पालन न करना प्रमुख है।

388. यदि आप उंची दृष्टि रखते है तो आपका मस्तष्क स्वतः उंचा रहेगा।

389. जब हम निर्माण करे तो ऐसा सोचकर करे कि यह हमेशा–हमेशा के लिए है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

390. आप किसी विषय का विशद ज्ञान हासिल करना चाहते हैं तो इसे दूसरों को सिखाना शुरू कर दीजिए।

391. आत्मविश्वास सरीखा दूसरा मित्र नही आत्मविश्वास ही भावी उन्नती की प्रथम सीढी है अतः सर्वप्रथम आत्मविश्वास करना सीखो।

392. नम्रता, दया और माफी हमेंशा दिल में रखना चाहिए।

393. सदैव प्रसन्न रहो। इससे मस्तिष्क में अच्छे विचार आते है और चित शुभ कार्यो की ओर लगा रहता है।

394. अच्छे कामो के लिए धन की कम आवश्यकता पडती है, पर अच्छे हृदय और संकल्प की अधिक।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

395. ऐसा कोई युग कभी नही रहा जिसमें अतीत का गुणगान और वर्तमान पर विलाप न किया गया हो।

396. हिंसा का मार्ग उचित नही अहिंसा में ज्यादा ताकत होती है इसी के बल पर बापू ने देश को फिरंगियो से मुक्त कराया था।

397. हम उपदेश सुनते है मन भर, देते है टन भर पर ग्रहण करते है कण भर।

398. गरीबी दुख नहीं देती,पड़ोसी की अमीरी दुखः दिया करती हैं।

399. महान व्यक्ति महत्वकांक्षा के प्रेम से बहुत अधिक आकर्षित होते है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

---

400. स्वास्थ्य सबसे बड़ी दौलत है, संतोष सबसे बड़ा खजाना है।

401. आत्मविश्वास सबसे बड़ा मित्र।

402. खोया सम्मान कभी वापस नहीं मिलता।

403. सच्चा मित्र अपने मित्र को धोखा नहीं देता।

404. कभी–कभी समय की उपेक्षा की जा सकती है, पर रोज–रोज घड़ी की ओर लापरवाह होना ठीक नहीं।

405. जो कांटों भरी राह पर नहीं चलता वह कभी सफलता को प्राप्त नहीं कर सकता।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

406. सुनो अधिक से अधिक, बोलो कम से कम।

407. कठिनाइयों का मुकाबला करो, चाहे सारी दुनिया दुश्मन ही क्यों न बन जाए।

408. गलती करो, गलतियां करो, हजार बार करो, पर ध्यान रहे एक गलती दोबारा मत करो।

409. सुख अनुकूल है, दुख प्रतिकूल हैं।

410. सफलता का रास्ता जितना आसान होगा,उसे हासिल करने का गौरव उतना ही कम होगा।

411. हम सही राह पर हैं तो विश्व की कोई शक्ति हमारा कुछ बिगाड़ नहीं सकती।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

---

412. जिंदगी कितनी ही बड़ी हो, वक्त की बरबादी से जितनी चाहे छोटी की जा सकती हैं।

413. सीखने का एक बेहतरीन तरीका है—प्रश्न पूछना और फिर धैर्यपूर्वक उसका उत्तर सुनना।

414. जीवन में सुख—दुख के अतिरिक्त कुछ नहीं।

415. सज्जन दयालु होते हैं।

416. सच्चे मित्र हीरों की तरह कीमती और दुर्लभ हैं झूठे मित्र पतझड़ के पत्तों की तरह सर्वत्र मिलते हैं।

417. नीति के विरूद्ध कोई काम करने का फल अपने तक ही नही रखता, दूसरो पर उसका और भी बुरा असर पडता है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

---

418. ऐसी नसीहत मत दो जो अति सुंदर हो, बल्कि ऐसी दो जो अति लाभदायक हो।

419. संसार मे बंधनो की कमी नही है, परंतु प्रेम का बंधन सबसे अनोखा सदृढ़ है।

420. जो सचमुच दयालु है,वही सचमुच बुद्धिमान है और जो दूसरो से प्रेम नही करता उस पर ईश्वर की कृपा नही होती।

421. संसार में बंधनों की कमी नहीं हैं, परंन्तु प्रेम का बंधन सबसे अनोखा व दृढ है।

422. असंतोष अपने उपर अविश्वास का फल यह कमजोर इच्छा का रूप है।

423. जब ईष्या सिर उठाती है तो प्रियजन भी हमारे शत्रु बन जाते है ईर्श्या से स्वयं को ही ज्यादा क्षति होती है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

---

424. मूर्ख व्यक्ति की समृद्धता से समझदार व्यक्ति का दुर्भाग्य कही ज्यादा अच्छा होता है।

425. वीरता मारने में नहीं मरने में है किसी की इज्जत बचाने में है इज्जत गवांने में नहीं।

426. बंदरगाह में खडा जलयान सुरक्षित होता है लेकिन जलयान वहा खडे रहने के लिए नहीं बने रहते।

427. दंड संपूर्ण जगत को नियम के अंदर रखता है यह धर्म की सनातन आत्मा है इसका उद्देश्य उद्दडता से बचना है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

428. केवल धन के संचय दारा पूर्णतः सुरक्षित होने की कल्पना नहीं करनी चाहिए धनबल से आत्मबल कहीं अधिक उपयोगी है।

429. जिस क्षण अपने से पूछोगे कि तुम सुखी हो उसी क्षण तुम सुखी नहीं रहोगे।

430. प्रेरणा की शक्ति बहुत चमत्कारी होती है इसी की उर्जा से व्यक्ति उचाइयों तक पहुंच जाता है।

431. अगर आप इन्द्रधनुष चाहते है तो आपको वर्षा का सामना तो करना ही पडेगा।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

---

432. सरल होना चाहिए पर मूर्ख नहीं सरलता का बेजा फायदा उठाने वालों पर कढाई भी जरूरी हैं।

433. उद्दडता और अनीति के मार्ग पर चलने वाला दुखः पाता है।

434. हम बाहरी दुनिया में तब तक शांति नहीं पा सकते है जब तक कि हम अंदर से शांत न हो।

435. नकारात्मक सोच रखने वाले व्यक्ति हर स्थिति में समस्या ढूढंते है वहीं सकारात्मक सोच रखने वाले व्यक्ति हर समस्या में मौका ढूढंते है।

436. जिस अपने में विश्वास नहीं उसे भगवान में कभी विश्वास नहीं हो सकता ।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

---

437. देशी भाषा का अनादर राष्ट्रीय आत्महत्या है।

438. स्मरण की सच्ची कला ध्यान की कला है।

439. जो समस्त मानव को अपनेपन से ओतप्रोत देखते देवता है।

440. भविष्य के लिए धरती के संसाधनों को बचाना चाहिए।

441. एक पल की भी पराधीनता करोडों नरक के समान है।

442. पाप–पुण्य व्यक्ति के कामों से जुडे है कोई किसी को पवित्र नहीं कर सकता।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,

---

443. बेहतर जिंदगी का रास्ता बेहतर किताबों से होकर जाता है।

444. आलस्य मृत्यु के समान है और केवल उद्यम ही आपका जीवन है।

445. अन्याय के सामने जो सीना तानकर खडा हो जाए, वही सच्चा वीर है।

446. आत्मा जिस कार्य से सहमत न हो उस कार्य के करने में शीघ्रता न करो।

447. उच्च कोटि का ग्रंथ वह ग्रंथ है जिसकी लोग प्रसंशा तो लोग करते है परन्तु बढते नहीं है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

---

448. जब जीवन से निराश हो जाए तो भागने की जगह संर्घष करे।

449. कष्ट ही तो वह प्रेरक शक्ति है जो मनुश्य को कसौटी पर परखती है।

450. देश बुद्धि को हम व्देश से नहीं मिटा सकते प्रेम की शक्ति ही उसे मिटा सकती है।

451. दंड द्वारा प्रजा की रक्षा करनी चाहिए लेकिन बिना कारण किसी को दंड नही देना चाहिए : रामायण।

452. नेता के रूप में खडें रहोगे, तो सहायता देने कोई भी नही आयेगा। सफल होना हो, तो पहले अहं का नाश कर डालो।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

453. संयम संस्कृति का मूल है विलासिता निर्बलता और चटुकारिता के वातावरण में न तो संस्कृति का उद्भव होता है और न विकास।

454. लोकतंत्र के पौधे का चाहे वह किसी भी किस्म का क्यों न हो तानाशाही में पनपना संदेहस्पद है।

455. मानवता प्रकाश की वह नदी है जो सीमित से असीम को ओर बहती है।

456. भोजन शरीर को जिंदा रखने के लिए जरूरी है पर लोभलालच व संग्रहवृति बुरी है।

457. सदा प्रसन्न रहना चाहिए, ईश्वर से सदा अपने को क्षमाष्शीलता मांगना चाहिए।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

458. समस्याओं से दुखी होने के बजाय उसे हल करने की आदत डालें।

459. ऐसे लोंगो से दोस्ती बढ़ाएं, जिनसे बातें करके आपको खुशी मिलती हैं

460. जगत का कर्ता सब जगह और सब प्राणी मात्र में मौजूद है। काम करने से पहले भलीष्भांति सोचना दूरदर्शिता है।

461. संसार में सच्चा सुख ईश्वर और धर्म पर विश्वास रखते हुए पूर्ण परिश्रम के साथ अपना कर्तव्य पालन करने में है।

462. पराजय के क्षणों में ही नायकों का निर्माण होता है। अतः सफलता का सही अर्थ महान असफलताओं की श्रृंखला है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

463. जो हमारे सामने दूसरों की निंदा कर रहा है। यह तय है कि दूसरों के सामने वह हमारी भी निंदा करेगा।

464. हम सही राह पर है तो विश्व की कोई शक्ति हमारा कुछ बिगाड़ नहीं सकती।

465. रिश्वत इंसान को खा जाती है।

466. बाधाएं व्यक्ति की परीक्षा होती है उनसे उत्साह बढ़ना चाहिए मंद नहीं पढना चाहिए।

467. आप जो करने से डरते है, उसे करिए और करते रहिए। अपने डर पर विजय पाने का यही सबसे कारगर तरीका हैं।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

---

468. प्रकृति को सहेजे, छेड़छाड़ हमेशा विनाशकारी होता हैं।

469. ज्ञान पुस्तकालयों में सोता और खर्राटे भरता है, किंतु बुध्दिमता हर कहीं है।

470. जिंदगी कितनी ही बडी हो, वक्त की बरबादी से जितनी चाहे छोटी की जा सकती है।

471. अच्छाई ही वह इकलौता निवेश है, जिसमें हानि कभी नही होती।

472. वास्तविक नेता वह है, जो सर्वसम्मति की तलाश नहीं करता, बल्कि सर्वसम्मति का निर्माण करता है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

473. सफलता सापेक्ष होती है। यह इस पर निर्भर करती है कि हमारा नजरिया क्या हैं।

474. जिसने आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त कर लिया, उस पर काम और लोभ का विष नही चढ़ता।

475. बुध्दिमान को जितने अवसर मिलते है उससे अधिक अवसर वह स्वंय निर्मित करता है।

476. यौवन और सौंदर्य के साथ मेधा और बुध्दिमता एक
दुर्लभ चीज होती है।

477. जैसे तिनका हवा का रूख बताता है, मामूली घटनाएं
मानव ह्रदय की वृत्तियों को बताती हैं।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

478. चरित्र को बनाए रखना आसान है, पर उसके भ्रष्ट
होने के बाद उसे सुधारना कठिन।

479. कांतियां छोटी छोटी बातों के बारे में भले न हो
लेकिन छोटी से छोटी बातो से ही होती हैं।

480. अनंत आलोकवान नक्षत्र तभी चमकते है, जब
अंधकार पर्याप्त घनीभूत होता है

481. मित्रों के बिना कोई भी जीना पसंद नहीं करेगा चाहे उसके पास शेष अच्छी वस्तुए क्यों न हो ।

482. विजय ध्येय की प्राप्ति में नही, वरन् उसकी प्राप्ति के लिए निरंतर प्रयास करने में है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

483. शब्दो में चमत्कार भरा होता है, शब्द भावना बना देता है और भावना शब्द के सहारे साकार होती है।

484. किसी मूर्ख व्यक्ति की पहचान उसके वाचालता से होती है तथा बुद्धिमान व्यक्ति की पहचान उसके मौन रहने से होती है।

485. अनुसरण करो बिना रूके एक लक्ष्य को लेकर, यही सफलता का रहस्य है।

486. जिस प्रकार थोड़ीसी वायु से आग भड़क उठती है, उसी प्रकार थोड़ीसी मेहनत से किस्मत चमक उठती है।

487. धन खोया तो कुछ भी नहीं खोया, चरित्र खोया तो सब कुछ खो दिया।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

488. पहले हर अच्छी बात का मजाक बनता हैं, फिर उसका विरोध होता है और फिर उसे स्वीकार कर लिया जाता है।

489. चंद्रमा अपना प्रकाश संपूर्ण आकाश में फैलाता है परंतु अपना कलंक अपने ही पास रखता है।

490. धर्म का संबंध हृदय की पवित्रता से है।

491. उची छंलाग लगाने वाले गिरने से भयभीत नहीं होते।

492. बगैर पहल किए व्यवस्था में परिर्वतन नहीं हो सकता।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

493. महान व्यक्ति न किसी का अपमान करता है और न उसको सहता है ।

494. सदगुण का पुरस्कार केवल सदगुण ही है ।

495. श्रद्धा की गुंजाइश तो वही है जहां बुद्धि कुंठित हो जाए।

496. केवल कर्महीन ही ऐसे होते हैं, जो सदा भाग्य को कोसते है और जिनके पास शिकायतों का अंबार होता हैं।

497. सदा सत्य बोलें, पर वह सत्य प्रिय होना चाहिए। अप्रिय सत्य और असत्य दोनों न बोलें अन्यथा सदा दुख भोगना पडता हैं।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

498. खुशी अपने आप में लक्ष्य नहीं, वरन बाय प्रोडक्ट हैं।

499. शिक्षा का उद्देश्य एक बंद दिमाग को खुले दिमाग में बदलना है।

500. नकल करके कोई आज तक महान नही हुआ।

501. क्षुधा पत्थर की दीवार को भी तोड डालती है।

502. प्रकृति अपरिमित ज्ञान का भंडार है, परंतु उससे लाभ उठाने के लिए अनुभव आवश्यक है।

503. सौभाग्य वीर से डरता है और कायर को डराता है।

504. मानव सेवा से ही ईश्वर की प्राप्ति संभव है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

505. जो व्यक्ति छोटी छोटी बातो में सच को गंभीरता से नही लेता, उस पर बडे मसलो में भी भरोसा नही किया जा सकता।

506. विचारकों को जो चीज आज स्पष्ट दीखती है दुनिया उस पर कम अमल करती है।

507. सबसे उत्तम विजय प्रेम की है जो सदैव के लिए विजेताओं का हृदय बाधं लेती है।

508. नियम के बिना और अभिमान के साथ किया गया तप व्यर्थ ही होता है।

509. सबसे अधिक ज्ञानी वही है जो अपनी कमियों को समझकर उसका सुधार कर सकता है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

510. कुछ लोग चीजों को वैसी ही देखते है जैसे कि वे है और पुछते है 'क्यों'? मैं ऐसी चीजों की कल्पना करता हूं जो कभी नहीं थी और पूछता हूं 'क्यों नहीं'?

511. नैतिकता एक कला की तरह होती है मतलब चित्र में एक लाइन।

512. जैसे तिनका हवा का रूख बजाता है वैसे ही दुर्घटनाएं भी मनुष्य के हृदय की वृत्तियों को बताती है।

513. ख्याती वह प्यास है जो कभी नहीं बुझती अगस्त्य ऋषि की तरह वह सागर को भी पीकर शांत नही होती।

514. नीति विरूध्द कार्य से व्यक्ति स्वयं तो झुलसता है, दूसरों पर भी बुरा असर पड़ता है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

515. आतंक के बल पर भय कायम किया सकता है, समाज सुधार कदापि नहीं।

516. केवल विश्वास ही ऐसा संबल है जो हमें मंजिल तक पहुँचाता है।

517. विद्या कामधेनु के समान है व्यक्ति विद्या हासिल कर उसका फल कहीं भी प्राप्त कर सकता है।

518. आपके अंदर भी एक महापुरूष सोया हुआ है, उसे वांछित साधन व्दारा प्रबुध्द कीजिए।

519. नशा तात्कालिक आत्महत्या है, इसमें सुध बुध खोकर व्यक्ति विवेक शून्य हो जाता है

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

520. असफलता निराशा का सूत्र नहीं है, वह तो नई प्रेरणा है।

521. जनता लोकतंत्र की ताकत है, वह जो ठान लेती है उसे कोई नहीं रोक सकता।

522. जिसने रवंय को वश में कर लिया है, संसार की कोई शक्ति उसकी विजय को पराजय में नही बदल सकती।

523. जो इंसान अपनी निंदा धर्य के साथ सुन लेता है, वह सारे संसार को जीत सकता है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

524. उच्च नैतिक व आत्मबल वाले व्यक्ति बड़े से बड़े कार्य में कभी भी असफल नहीं होते।

525. जीवन में किसी सद्उद्देश्य की सफलता के लिए दृढ निश्चय होना आवश्यक है।

526. यदि आप सच कहते हैं तो आपको कुछ याद रखने की जरूरत नहीं रहती।

527. प्रार्थना,पश्चाताप एक चिन्ह है जो हमारे अधिक अच्छे और अधिक शुध्द होने की आतुरता को सूचित करते हैं।

528. सत्य से प्यार करें और गलतियों को क्षमा कर दें।

529. यदि आप न्याय के लिए लड़ रहे है, तो ईश्वर सदैव आप के साथ है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

530. कृतज्ञता एक कर्तव्य है, जिसे पूरा करना चाहिए।

531. परमात्मा ने जो कुछ तुमको दिया है, उसके लिए परमात्मा के प्रति कृतज्ञता प्रकट करो।

532. करनी तो करो किन्तु उस पर गर्व मत करो।

533. जिसकी अपनी कोई राय नहीं हाती है, बल्कि दूसरों की राय और रूचि पर निर्भर रहता है, वह गुलाम है।

534. दुनिया में प्रसन्न रहने का एक ही उपाय है और वह यह है कि अपनी जरूरतें कम करें।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

535. सफलता का कोई रहस्य नहीं है। यह तैयारी कडी मेहनत और असफलता से सिखाने का ही परिणाम होता है।

536. जो लोकप्रिय है, वह खुद का धनी है, किन्तु जो लोकप्रिय बनता है, उसकी दुर्दशा होती है।

537. हम दूसरो का अहंकार इसलिए सहन नही कर पाते क्योंकी उससे हमारा अपना अहंकार आहत होता है।

538. यदि एक मनुष्य की उन्नति होती है तो उसके साथ पूरे संसार की उन्नति होती है और यदि एक व्यक्ति का पतन होता है तो पूरे संसार का पतन होता है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग,छ.ग.

539. आप प्रसन्न है या नहीं यह सोचने के लिए फुरसत होना ही दुखी होने का रहस्य है और इसका उपाय है आपका किसी काम में व्यस्त होना।

540. हमारे जीवन का उस दिन अंज होना शुरू हो जाता है जिस दिन हम उन विशयों के बारे में चुप रहना शुरू कर देते है जो मायने रखते है।

541. जहां उतार चढाव है उसी का नाम राजनीति है।

542. हम वैसे ही है जैसे हमारे विचारों ने हमें बनाया है ध्यान दे कि आपका चिंतन कैसा है शब्द बहुमूल्य नहीं है विचार का ही महत्व है।

543. ईश्वर ने सब मनुष्यों को स्वतंत्र पैदा किया है लेकिन व्यक्तिगत स्वतंत्रता वहीं तक दी जा सकती है जहां दूसरों की आजादी में दखल न पडें यही राष्ट्रीय नियमों का मूल है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.;छ.ग.द्ध

544. जिस ज्याग से अभिमान उत्पन्न होता है वह त्याग नहीं त्याग से शांति मिलनी चाहिए अंततः अभिमान का त्याग ही सच्चा त्याग है।

545. धर्म केवल चिंतन नहीं चिंतन के साथ आचरण भी है।

546. मनुष्य का बडप्पन धन संपति में नही बल्कि सबके हित में कार्य करने में छिपा है।

547. उन सभी कारणो को भूल जाए कि कोई कार्य नही होगा, आपको केवल एक अच्छा कारण खोजना है कि यह कार्य सफल होगा।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

548. दुष्टों का बल हिंसा है. राजाओं का बल दंडविधि, स्त्रियों का बल सेवा और गुणवानों की बल क्षमा है।

549. लोंगो के साथ सामंजस्य स्थापित कर पाना ही सफलता का एक अति महत्वपूर्ण सूत्र है।

550. किसी भी काम को खुबसूरत से करने के लिए मनुष्य को उसे स्वंय करना चाहिए।

551. जब घर मे धन और नाव में पानी आने लगे तो उसे दोनो हाथों से निकाले।

552. संसार का सबसे बडा दिवालिया वह है जिसने उत्साह खो दिया।

553. कामयाबी तक पहुँचने के रास्ते सीधे नहीं होते।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

554. शुरू में वह किजिए जो आवश्यक है फिर वह जो सभंव है और अचानक आप पाएगें कि आप तो वह कर रहे जो असभंव की श्रेणी में आता है।

555. सत्य और मनुष्य किसी से घृणा नही करता।

556. स्वर्ग और मुक्ति का द्वार मनुष्य का हृदय ही है।

557. जो दूसरो को जानता है वह विद्वान और जो खुद को जानता है वह ज्ञानी है।

558. मनोबल मनुष्य का प्रधान बल है इसमें वृद्धि बिना जीवन के बिना किसी क्षेत्र में सफलता नही मिल सकती।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

559. सार्थक और प्रभावी उपदेश वह है जो वाणी से नही अपने आचरण से प्रस्तुत किया जाता है।

560. जब तक हम दुसरो के बारे में नही सोचते और उनके लिए कुछ नही करते है तब तक खुशियों के सबसे बडे स्त्रोत को गंवाते है।

561. सहनशीलता एक ऐसा गुण है जो मनुष्य की सक्षम शक्तियों को सुव्यवस्थित रखता है।

562. इच्छाओं का संर्घष यह प्रकट करता है कि जीवन व्यवस्थित होना चाहता है।

563. मनुष्य के लिए अध्ययन की उतनी ही आवश्यकता है जितना शरीर के लिए व्ययाम।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

564. ऐसी कोई कठिनाई नहीं जो आसान न हो जाए इसलिए मनुष्य को घबराना नहीं चाहिए।

565. अच्छे कामों के लिए धन की कम आवश्यकता पडती है पर अच्छे हृदय और संकल्प की अधिक।

566. साहस के बिना आप इस दुनिया में कुछ भी नहीं कर सकते सम्मान के बाद यह मस्तिष्क का सबसे बडा गुण है।

567. प्रकृति का तमाशा भी खूब है सृजन में समय लगता है जबकि विनाश कुछ पलों में हो जाता है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

568. जैसे पके हुए फलों को गिरने के सिवा कोई भय नहीं वैसे ही पैदा हुए मनुष्य को मृत्यु के सिवा कोई भय नहीं।

569. प्रतिभा का अर्थ है बुद्धि में नई कोपले फूटते रहना नई कल्पना नया उत्साह नई खोज और नई स्फूर्ति प्रतिभा के लक्षण है।

570. कामनाएं समुद्र की भाति अतृप्त है पूर्ति का प्रयास करने पर उनका कोलाहल और बढता हैं।

571. दौलत से आदमी को जो सम्मान मिलता है, वह उसका नहीं, उसकी दौलत का सम्मान है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

---

572. जिस व्यक्ति की त्याग की भावना अपनी जाति से आगे नहीं बढ़ती, वह खुद स्वार्थी है और अपनी जाति को भी स्वार्थी बनाता हैं।

573. जीवन की सार्थकता परोपकार में निहित हैं।

574. श्रद्धा छोटी उपासना से शुरू होती है और अंत जीवन को महान बना देती है।

575. अपने सामने एक ही साध्य रखना चाहिए। जब तक वह सिध्द न हो, तब तक उसी की धुन में मगन रहो, तभी सफलता मिलती हैं।

576. बादलों से भले ही उपाधियां व जागीरें बरस जाएं, धन चाहे हमें खोजे, लेकिन ज्ञान की खोज तो हमें करनी होगी।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

---

577. जो व्यक्ति पढ़ता नहीं है, वह उस व्यक्ति से कतई बेहतर नहीं है जो अनपढ़ है।

578. ऐसे देश को छोड़ देना चाहिए जहां न आदर है, न जीविका, न मित्र, न परिवार और न ही ज्ञान की आशा।

579. डूबते को तारना ही अच्छे इंसान का कर्तव्य होता है।

580. अर्धम की सेना का सेनापति झूठ है। जहां झूठ पहुचं जाता है वहां अर्धम राज्य की विजयष्दुंदुभी अवश्य बजती है।

581. दीनदुखियों कि सेवा ही सच्ची ईश्वर सेवा हैं।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

582. प्रकृति, समय और धैर्य ये तीन हर दर्द की दवा है।

583. कविता गाकर रिझाने के लिए नहीं समझ कर खो जाने के लिए हैं।

584. जीवन की सार्थकता परोपकार में निहित है।

585. राजनीति से अधिक महत्व सामाजिक सरोकार का हैं।

586. अकेलापन कई बार अपने आप से सार्थक बाते करता है वैसी सार्थकता भीड़ में या भीड़ के चिंतन में नहीं मिलती।

587. विद्वता युवको को संयमी बनाती है। यह बुढ़ापे का सहार है, निर्धनता में धन है, और धनवानों के लिए आभूषण है

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

588. सपने हमेशा सच नहीं होते पर जिंदगी तो उम्मीद पर टिकी होती है।

589. दुखियारो को हमदर्दी के दो आंसू भी कम प्यारे नहीं होते।

590. प्रजा के सुख में ही राजा सुख है।

591. शिक्षा के साथ सज्जनता व्यक्तित्व में चारचांद लगा देते है।

592. जीवन किताबी ज्ञान से नहीं व्यवहारिता से चलता हैं।

593. अहंकारी व्यक्ति स्वंय को समाज से दूर कर लेता हैं।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

594. काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकृतियों को अपने अंदर से निकाल देना चाहिए।

595. दूसरो के साथ ऐसा व्यवहार करें जैसा आप अपने लिए चाहते हैं।

596. दुनिया का अस्तित्व शस्त्रबल पर नहीं, सत्य, दया और आत्मबल पर है।

597. सभी से प्रेम करें कुछ पर विश्वास करें और किसी के साथ भी गलत न करें।

598. चरित्र दो चीजों से बनता है, आपकी विचारधारा से और आपके समय बिताने के ढंग से।

599. आप जितनी ज्यादा जिम्मेदारी लेने के लिए तैयार रहते हैं। उतने ही अधिक लोगों के विश्वसनीय बनते हैं।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

---

600. असफता की उत्पत्ति तभी होती है, जब आप प्रयास करना बंद कर देते हैं।

601. ईमानदारी से बडी कोई विरासत नहीं हैं।

602. चिंता उन्हें होती है जिन्हें ईश्वर पर विश्वास नहीं होता।

603. सत्य से कीर्ति प्राप्त की जाती है और सहयोग से मित्र बनाए जाते हैं।

604. दान से संपत्ति घटती नहीं बल्कि बढ़ती है, ठीक गुलाब की शाखें काटने से और अधिक गुलाब आते हैं।

605. जो जान गया कि उससे गलती हो गई और उसे ठीक नहीं करता, तो वह एक और गलती कर रहा हैं।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

606. केवल विश्वास ही ऐसा संबल है जो व्यक्ति को मंजिल तक पहुचाता है।

607. जो सबके दिल को खुश कर देने वाली वाणी बोलता है, उसके पास दरिद्रता कभी नहीं भटक सकती।

608. आलसी व्यक्ति अज्ञान की नींद सोता रहता है और बुध्दिमान व्यक्ति तीव्र गति से आगे निकल जाता है।

609. न्याय की बात कहने के लिए हर समय ठीक है।

610. काई भी व्यक्ति अयोग्य नही होता, केवल उसको उपयुक्त काम में लगाने वाला ही कठिनाई से मिलता है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

611. असफलता की उत्पति तभी होती है, जब आप प्रयास करना बंद कर देते है।

612. कभी भी अपने आपको बहुत उंचा मत समझो, कानून तुमसे भी उपर है।

613. कहने से पहले सहने की क्षमता रखो।

614. कर्म ज्ञान और भक्ति ये तीनो जहां मिलते है वहीं सर्वश्रैष्ठ पुरूषार्थ जन्म लेता है।

615. संन्यास हृदय की एक दशा का नाम है, किसी उपरी नियम या वेशभूशा वगैरह का नही।

616. धैय व परिश्रम से हम वह प्राप्त कर सकते है,जो शक्ति और जल्दबाजी में कभी नही।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

617. यदि मनुष्य सीखना चाहे तो उसकी प्रेत्यक भूल उसे कुछ न कुछ शिक्षा दे सकती है।

618. जहां पवित्रता है, निर्भयता वही हो सकती है।

619. निःशस्त्र अहिंसा की शक्ति किसी भी परिस्थिति में सशस्त्र शक्ति से सर्वश्रेष्ठ होगी।

620. मित्रों को संतुष्ट रखने का सर्वोत्तम तरीका है कि न तो उधार दो और न कभी उनसे उधार लो।

621. अंधा वह नहीं जिसकी आंखे नहीं हैं, अंधा वह है जो अपने दोषों को छिपाता है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

622. जो व्यक्ति किसी को रचनात्मक विचार देता है, वह उसे हमेशा के लिए संपन्न कर देता है।

623. धैर्य से कमजोर आदमी को भी बल मिलता है। बेसब्री से तो शक्ति बर्बाद होती है।

624. कलुशित विचार हमारे सुख में भी डंक मारते है और सदविचार हमें कष्टों में भी सांत्वना देते है।

625. अज्ञानता और विचारहीनता मानवता के विनाश के दो सबसे बडे कारण है।

626. परमात्मा की देने की सीमा नही हो सकती उनकी रक्षा में कभी क्षीणता नही आती।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

627. अपमान का डर कानून के डर से किसी तरह कम कियाशील नही होता।

628. अपने प्रत्येक दिन को सर्वोत्कृष्ट बनाएं।

629. कार्य में विश्राम वैसा ही है,जैसा नेत्रों के लिए पलकों का होना।

630. हम सब ज्ञान से युक्त हों, ज्ञान के साथ हमारा कभी वियोग न हो।

631. जो मनुष्य अपने विद्या और ज्ञान को कार्य के रूप में परिणित कर सकता है वह दर्जनो कल्पना करने वालो से श्रेष्ठ है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

632. उस आस्था का कोई मूल्य नहीं जिसे आचरण में न लाया जा सकें।

633. ज्ञानी ही सत्य को देख सकते है, अज्ञानी नही।

634. नेतृत्व करने वालो के शब्दकोशो में असभंव शब्द नही होता कितनी ही बडी चुनौतियों क्यों न हो, मजबूत इरादे और संकल्प से उन्हें सुलझाया जा सकता है।

635. जो सोचता है कर पाएगा वह कर पाता है, जो नही कर पाने की सोचता है वह नही कर पाता है यह एक अनवरत निर्विवाद नियम है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

636. जो धर्म दूसरे धर्म का बाधक होता है वह धर्म नही कुधर्म है सच्चा धर्म वही है जो किसी धर्म का विरोधी न हो।

637. जो वर्तमान की उपेक्षा करता है वह अपना सब कुछ खो देता है।

638. जो तर्क को सुने ही नहीं, वह कट्टर है, जो तर्क कर हीना सके, वह मूर्ख है और जो तर्क करने का साहस हीन कर सके, वह गुलाम है।

639. समस्या को टालने की बजाय उसे सुलझाना श्रेयस्क है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

640. अकर्मण्यता इन्सान के व्यक्तित्व को जंग लगा देती है।

641. कर्म में इच्क्षा, वासना और अहंता मिलाते हैं तो कर्म तुच्क्ष हो जाता है।

642. परोपकार व सत्कर्म ही जीवन का परम उद्देश्य होना चाहिए।

643. मानव सेवा से ही ईश्वर प्राप्ति संभव है।

644. जो अहित करने वाली चीज है, वह भले ही कितनी भी सुदंर हो, लेकिन अकल्याणकारी है। सुदंर वही हो सकता है, जो कल्याणकारी हो।

645. जनतंत्र में एक मतदाता का अज्ञान जनतंत्र को संकट में डाल सकता है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

646. आलस्य में दरिद्रता बसती है, लेकिन जो व्यक्ति आलस्य नहीं करते उनकी मेहनत में लक्ष्मी का निवास होता है।

647. हजार योध्दाओं पर विजय पाना आसान है, लेकिन जो अपने उपर विजय पाता है वही सच्चा विजय है।

648. मोहब्बत त्याग की मां है। वह जहां जाती है अपने बेटे को साथ ले जाती है।

649. सत्याग्रह बलप्रयोग के विपरीत होता है। हिंसा के संपूर्ण त्याग में ही सत्याग्रह की कल्पना की गई है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

650. लोभ को अभी जीतने का प्रयास करें क्योंकि 'मानव जब बूढो भयो, तृश्णा भई जवान'।

651. समय के उपर कर्म भी नही छोड़ना चाहिए, कर्म करते रहेंगे तो समय भी आपके अनुकूल रहेगा।

652. रंगो की उमंग खुशी तभी देती है जब उसमें उज्जवल विचारों की अबरक चमचमा रही हो।

653. हर दिन मेरा सर्वश्रेष्ठ दिन है यह मेरी जिंदगी है, मेरे पास यह क्षण दुबारा नही होगा।

654. जागो,उठो और तब तक रूको नही जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए।

655. ठोकर लगे और दर्द हो, तभी हम सीख पाते है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

656. भूख प्यास से जितने लोगों की मृत्यु होती है उससे कहीं अधिक लोगो की मृत्यु ज्यादा खाने और ज्यादा पीने से होती है।

657. धन के भी पर होते है। कभी कभी वे स्वंय उड़ते हैं और अधिक धन लाने के लिए उन्हें उड़ाना पड़ता है।

658. मानव का मानव होना ही उसकी जीत है, दानव होना हार है, और महामानव होना चमत्कार है।

659. न रगडे के बिना रत्न पर पालिश होती है,न कठिनाइयों के बिना मानव में पूर्णता आती है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

660. प्रसन्नता परम स्वास्थ्यवर्धक है, देह और मन दोनों के लिए मित्र तुल्य।

661. वह आजादी बेमायने है जिसमें हमें गलतियां करने की आजादी न मिले।

662. संकल्प कर लेना चाहिए कि असत्य और हिंसा के द्वार कितना भी लाभ हो, हमारे लिए वह त्याज्य है।

663. व्यक्ति को हानि, पीड़ा और चिंताएं उसकी किसी आंतरिक दुर्बलता के कारण होती हैं। उसे दुर्बलता को दूर करके कामयाबी मिल सकती है।

664. दरिद्रता सब पापों की जननी है तथा लोभ उसकी सबसे बड़ी संतान है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

665. धोखा देकर दगाबाजी से धन जमा करना ऐसा ही है जैसा कि मिट्टी के कच्चे घड़े में पानी भरकर रखना।

666. असफलता यह सिध्द करती है कि सफलता का प्रयास पूरे मन से नहीं हुआ।

667. किसी के गुणों का स्मरण करो, दोषो को नही।

668. धैर्य जीवन के लक्ष्य का द्वार खोल देता हैं, क्योंकि सिवा धैर्य के उस द्वार की और कोई कुंजी नहीं है।

669. हम सुखो का महत्व तभी समझ पाते है जब वे हमसे दूर चले जाते हैं।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

670. हमारे द्वारा कार्य के लिए लगाए गए समय का महत्व इतना नहीं है, जितना महत्व इस बात का है कि लगाए गए समय के दौरान कितनी गंभीरता से प्रयास किया।

671. यदि आपका हृदय ईमान से भरा है, तो एक शत्रु तो क्या समूची दुनिया आपके सामने हथियार डाल देगी।

672. ईमानदारी से मेहनत करके उदरपूर्ति करना चाहिएं

673.जिस वस्तु की हमें जरूरत न हो, उसका इस्तेमाल करना भी एक तरह की चोरी ही है।

674.जिसने स्वंय को वश में कर लिया है, संसार की कोई शक्ति उसकी विजय को पराजय में नही बदल सकती।

675.चाहे कोई हमारी बात समझे या न समझे,संक्षेप में कहना हमेंशा अच्छा है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

676.दोस्ती धीरे धीरे बढाना चाहिए जब दोस्ती हो जाए तो उसमें दृढ और अचल रहना चाहिए।

677. भगवान यह नही चाहता कि हम सफल हो, भगवान चाहते है कि हम प्रयास तो करें।

678. जब किसी व्यक्ति द्वारा अपने लक्ष्य को इतनी गहराई चाहता है कि वह उसके लिए अपना सब कुछ दांव पर लगाने के लिए तैयार होता है तो उसका जीतना सुनिश्चित होता है।

679. जीवन की उन सीमाओं को छोड कर कोई और सीमाएं नही है, जिन्हें आप खुद तय करते है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

680. तर्क केवल बुद्धि का विश्य है हृदय की सिद्धि तक नही पहुंच सकती जिसे बुद्धि माने लेकिन हृदय न माने वह त्याज्य है।

681. राजनिति सौंदर्यबोध को प्रभावित करती है सता विसेषकर अतुलनीय सता सुदंर दिखाई देती है

682. स्वाभिमानी पुरूष मर मिटता है पर किसी के सामनें दीन नही बनता।

683. नारी की करूणा अंतरजगत का उच्चतम विकास है जिसके बल पर समस्त सदाचार ठहरे हुए है।

684. दोस्त मिला, तो मानो जरूरत पूरी हुई।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

685. प्रत्येक व्यक्ति की अच्छाई ही प्रजातंत्रीय शासन की सफलता का मूल सिद्धांत है।

686. शब्द पतीयों की तरह है जब वे ज्यादा होते है तो अर्थ के फल दिखाई नही देते।

687. बैर कोध का आचार या मुरब्बा है।

688. संवेदनशीलता न्याय की पहली अनिवार्यता है।

689. मौका किसी को चोर बना देता है।

690. महान व्यक्ति महत्वाकांक्षा के प्रेम से बहुत अधिक आकर्शित होते है।

691. सुख के बाद दुख आता है और दुख के बाद सुख। मनुष्य के दुख और सुख गाडी के पहिये के समान है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

692. काम की समाप्ति संतोषप्रद हो तो परिश्रम की थकान याद नही रहती।

693. देश कभी चोर उचक्को की करतूतो से बराद नही होता बल्कि शरीफ लोगों की कायरता निकम्मेपन से होता है।

694. भीरू व्यक्ति हमेंशा भाग्य को दोष देता है।

695. ईमानदारी से मेहनत करके उदरपूर्ति करना चाहिए।

696. अपवित्र कल्पना उतनी ही बुरी होती हैं जितना बुरा अपवित्र कर्म।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

697. जिस प्रकार ऑखो को देखने के लिए रोशनी की जरूरत होती है, उसी तरह हमारे दिमाग को समझने के लिए विचारों की जरूरत होती है।

698. ऐसे लोगो से दोस्ती बढ़ाएं, जिनसे बातें करके आपको खुशी मिलती हैं।

699. सदा प्रसन्न रहना चाहिए, ईश्वर से सदा अपने को क्षमाशीलता मांगना चाहिए।

700. भक्ति,कर्म और ज्ञान हमारे जीवन के अभिन्न अंग हैं।

701. लगातार गल्तियों का मतलब सफलता के निकट होना।

702. अपनी अहंकार पर विजय पाना ही प्रभु की सच्ची सेवा हैं।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

---

703. समस्याओं से दुखी होने की बजाय उसे हल करने की आदत डालें।

704. जहॉ आदर और विश्वास मिलें वहॉ श्रद्धा उत्पन्न होती हैं।

705. दुनिया को देखना बुरा नहीं हैं, उसके प्रति आसक्ति बनाना बुरा हैं।

706. जिसके पास धैर्य है,वह जो कुछ इच्छा करता है,उसे प्राप्त कर सकता हैं।

707. न्याय करना तो केवल ईश्वर का काम है,आदमी का काम तो केवल दया करना हैं।

708. आकाश में उडने वाले पंछी को भी अपने घर की याद आती है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

709. विनय के बिना संपत्ति क्या? चंद्रमा के बिना रात क्या।

710.आपका जीवनभर खुश रहना ही आपके दुश्मनों के लिए सबसे बड़ी सजा हैं।

711. गिरे को उठाएं, उठे को चलाए और चलते हुए को दौड़ाकर उसके लक्ष्य तक पहुंचाएं।

712. नाशवान शरीर की नहीं, चिंता सदैव स्थिर रहने वाले यश की करनी चाहिए।

713. ज्ञानी वही है जो वर्तमान को ठीक प्रकार समझ सके और परिस्थिति के अनुसार आचरण करे।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

714. जब आप अपने मित्रों का चयन करते हैं तो चरित्र के स्थान पर व्यक्तित्व को न चुनें।

715. दूसरों के दुर्भाग्य से या गलतियों से बुद्धिमान व्यक्ति यह शिक्षा ग्रहण करते हैं कि उन्हें किस बात से बचना चाहिए।

716. निर्बलों की सेवा करना ही सच्ची ईश्वर सेवा हैं।

717. सच्चा सुख वैभव प्रदर्शन में नहीं बल्कि त्याग में हैं।

718. संसार कर्म प्रधान है जैसा करोगे वैसा फल पाओगे।

719. अन्याय को चुपचाप सहना सबसे बड़ा पाप हैं।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

720. जब तक लक्ष्य हासिल नहीं होता, कदापि न रुको।

721. जिसने एक बार धोखा दे दिया हो, उसका विश्वास नहीं करना चाहिए।

722. भाग्य साहसी लोगों की मदद करता हैं।

723. अगर तुम जितना पाते हो उस से कम खर्च करते हो तो तुम्हारे पास पारस पत्थर हैं।

724. जिसने अहंकार को त्याग दिया वह भवसागर से तर गया।

725. शासन करना आसान है, प्रशासन चलाना मुश्किल।

726. जीवन वैसे ही बहुत छोटा है, लेकिन हम समय की अंधाधुंध बर्बादी करके इसे और भी छोटा कर देते है।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

---

727. मारने वाले से बचाने वाला हमेंशा बडा होता है।

728. जिसके सद्विचार होते है वह कभी एकाकी नही होता।

729. अर्निणय की स्थिति आत्मघाती सिद्ध होती है।

730. समानता ही आजादी की आत्मा है, अगर समानता ही न हो तो आजादी निरर्थक है।

731. यदि जीवन में प्रगति करने और बुध्दिमानी की कोई बात है तो वह है एकाग्रता।

732. काहिली और मन की पवित्रता एक साथ नहीं रह सकतीं।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

733. मैं असफल नहीं हुआ हूं, बल्कि मैंने तो 10 हजार ऐसे तरीके ढूंढ लिए हैं जो काम के नहीं निकले।

734. जो वस्तु आनंद नही प्रदान कर सकती वह सुंदर नहीं हो सकती और जो सुंदर नहीं हो सकती वह सत्य भी नहीं हो सकती।

735. वृक्ष अपने सिर पर गरमी सहता है पर अपनी छाया में दुसरों का ताप दूर करता है।

736. इस दुनिया में साधारण जीवन तो सभी जीते हैं आप अपनी जिंदगी में कुछ ऐसा काम करें, जिससे दुनिया आपके जाने के बाद भी आपको याद करें।

सोच हटके, जियो डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

737. अगर आपने किसी बात को अपनी खुद की आंखो से नहीं देखा है, या खुद के कानों से नहीं सुना है, तो उसे अपने छोटे से दिमाग से पैदा करके, बड़े से मुंह से चारों तरफ मत फैलाओं।

738. विनम्रता दुनिया में सबसे ज्यादा पाया जाने वाला पसंद है।

739. मेहनत करने से दरिद्रता नहीं रहती, धर्म करने से पाप नहीं रहता, मौन रहने से कलह नहीं होता और जागते रहने से भय नहीं होता।

740. समस्याओं का उसी मानसिकता के उपयोग से हल नही निकाला जा सकता है, जिस मानसिकता के चलते वे पैदा हुई है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

741. जब तक हम दूसरो के बारे में नहीं सोचते और उनके लिए कुछ नहीं करते, तब तक हम खुशियों के सबसे बड़े स्त्रोत को गंवाते रहते हैं।

742. आप किसी भी क्षेत्र में हो, यदि अपने से नीचे के लोंगो को समर्थ एवं अधिकार संपन्न बना सकें तो आपकी लोकप्रियता में इजाफा ही होगा।

743. ग्राहको को सेवा के तहत मिलने वाले सुखद आश्चर्य किसी भी ब्रांड के प्रति उनकी निष्ठा बढ़ाते है जब भी संभव हो अपने ग्राहकों को इस तरह के आश्चर्य देते रहना चाहिए।

744. तकनीकी महारत हासिल करने के बाद अपने चुनिंदा क्षेत्र के सदाबहार हीरो बन सकते है। इस बात के ढ़ेरो उदाहरण मौजुद हैं।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

745. छोटे कारोबार की बड़ी महत्ता है। आपका व्यवस्थित से संचालित छोटा कारोबार दूसरों के लिए भी रोजगार का जरिया भी बन सकता है।

746. सद्विचारों से ही व्यक्ति प्रगति करता है।

747. न्याय में देर करना न्याय को अस्वीकार करना है।

748. जिस श्रम से हमें आनंद प्राप्त होता है, वह हमारी व्याधियों के लिए अमृत तुल्य है, हमारी वेदना की निवृत्ति है।

749. वही राष्ट् सच्चा लोकतंत्रात्मक है जो अपने कार्य को बिना हस्तक्षेप के सुचारू और सकिय रूप से चलाता है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

750. अभिलाषा सब दुखों का मूल हैं।

751. कोई भी भाषा अपने साथ एक संस्कार एक सोच एक पहचान और प्रवृति को लेकर चलती है।

752. सच बोलना अच्छी बात है लेकिन सच–सच बोलने में कभी–कभी मुसीबत बढ़ जाती हैं। अतः सच बोलने की भी अपनी सीमाएं हैं।

753. शब्द समहाल कर बोलिए, शब्द के हाथ न पॉव।
एक शब्द औषधि करे, एक शब्द करे घाव।।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

754. शरीर नश्वर है, रिश्ते–नाते और धन–दौलत नश्वर हैं फिर किस बात पर घमंड करते हो ? क्या लेकर जाओगे ?

755. संसार में सबसे सुखी व्यक्ति वही होता है जो अपने घर में शांति पाता हैं।

756. प्रजा के सुख में ही राजा का सुख हैं।

757. जिस प्रकार जल कमल के पत्ते पर नहीं ठहरता उसी प्रकार मुक्त आत्मा के कर्म उससे नहीं चिपकते है।

758. अकर्मण्यता के जीवन से यशस्वी जीवन और यशस्वी मृत्यु श्रेष्ठ होती है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

759. अगर आपका दिमाग कुछ सोच सकता है और आपका दिल उस पर भरोसा करता है तो यकीन मानें कि आप उसे कर सकते है।

760. मन ही अपने लिए जीवन की राह बनाता है और मृत्यु की राह भी मन में ही तैयार होती है विचार उस राह की सीमा निश्चित कर देते है।

761. पुण्य की कमाई मेरे घर की शोभा बढाए पाप की कमाई को मैने नष्ट कर दिया है।

762. कुमंत्रणा से राजा का कुसंगति से साधु का अत्यधिक से पुत्र का और अविद्या से ब्राम्हण का नाश होता है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

763. मानसिक जगत का पर्यवेक्षक बहुत बलवान और वैज्ञानिक प्रशिक्षणयुक्त होना चाहिए।

764. संसार में ऐसे अपराध कम ही है जिन्हें हम चाहे और क्षमा न कर सके।

765. गलती मत ढूढो इलाज ढूढों।

766. कुछ प्रलोमन परिश्रमी व्यक्ति को हो सकते है, किंतु सारे प्रलोमन तो केवल आलसी व्यक्ति पर ही आकमण करते हैः मुक्ता देश का उद्धार।

767. हर चीज की कीमत व्यक्ति की जेब और जरूरत के अनुसार होती है और शायद उसी के अनुसार वह अच्छी या बुरी होती है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

---

768. धन के लोभी के पास सच्चाई नही रहती और व्यभिचारी के पास पवित्रता नही रहती।

769. मासिक वेतन पूरनमांसी का चांद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते घटते लुप्त हो जाता है।

770. विवेक जीवनी का बेहतर हिस्सा नही है।

771. मैं जिससे भी मिलता हूं वह किसी न किसी मामले में मुझसे बेहतर होता है।

772. आदमी की दुर्भावना उसके दुश्मन की बजाय उसे ही अधिक दुख देती है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

773. मन को शांत व स्थिर रखने के लिए उपासना, सांधना स्वाध्याय का सतत अभ्यास आवश्यक है।

774. सबसे महान कलाकार वह है जो जीवन को ही कला का विष्य बनाए।

775. धर्म से आध्यिात्मि जीवन विकसित होता है यह समृद्धि भी लाती है।

776. हमारा लेखन ऐसा नही होना चाहिए कि पाठक हमें समझ न पाए बल्कि ऐसा होना चाहिए कि वह किसी भी तरह हमें गलत न समझ जाए।

777. प्रतिभा का विकास शांत वातावरण में होता है और चरित्र का विकास मानव जीवन के तेज प्रवाह में।

सोच हटके, जियों डटके
संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

778. श्रेष्ठ वही है जिसके हृदय में दया व धर्म बसते है जो अमृतवाणी बोलते है और जिनके नेत्र विनय से झुके होते है।

779. मन पर काबू करना हो, तो उसे अनदेखा करें।

780. मित्र क्या है एक आत्मा जो दो शरीरो में निवास करती है।

781. भाग्य संयोग का नही चयन का विष्य है यह कोई ऐसी वस्तु नही है जिसके लिए प्रतीक्षा की जाए, यह तो ऐसी वस्तु है जिसे प्राप्त किया जाना चाहिए।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

---

782. उनसे दूर रहे जो आपकी महत्वकांक्षाओं को तुच्छ बनाने का प्रयास करते है छोटे लोग हमेंशा ऐसा करते है लेकिन महान लोग आपको यह अनुभूति करवाते है कि आप भी महान बन सकते है।

783. निर्मल बुद्धि व श्रम मे श्रद्धा यही दो वस्तुएं मनुष्य को महान बनाती है।

784. सत्त परिश्रम, सुकर्म और निरंतर सावधानी से ही स्वतंत्र का मूल्य चुकाया जा सकता है।

785. मानव हृदय में घृणा, लोभ और द्वेश वह विशैली घास हैं जो प्रेम रूपी पौधे को नष्ट कर देती है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

---

786. दुख को दूर करने की एक ही अमोघ ओषधि है मन से दुखों की चिंता ना करना।

787. दस गरीब आदमी एक कंबल से आराम से सो सकते हैं,परन्तु दो राजा एक ही राज्य में इकट्ठे नहीं रह सकते।

788. बिना ज्ञान के ईश्वर मौन है, न्याय निद्रित है, विज्ञान स्तब्ध है और सभी वस्तुएं पूर्ण अधंकार में हैं।

789. आप किसी व्यक्ति से जिस भाड्डा को वह समझता हो उसमें बात करें तो बात उसकी समझ में आती है लेकिन आप अगर उससे उसकी मातृभाषा में बात करे तो वह उसके दिल में जाती है।

790. समझौता एक अच्छा छाता भले बन सकता है, लेकिन अच्छी छत नहीं।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

---

791. हसंमुख व्यक्ति वह फुहार है जिसके छींटे सबके मन को ठंडा करते हैं।

792. अंग्रेजी माध्यम भारतीय शिक्षा में सबसे बड़ा विध्न है। सभ्य संसार के किसी भी जन समुदाय की शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषा नहीं है।

793. सत्त परिश्रम, सुकर्म और निरंतर सावधानी से ही स्वतंत्र का मूल्य चुकाया जा सकता है।

794. यह सच है कि पानी में तैरने वाले ही डूबते है, किनारे पर खड़े रहनेवाले नहीं, मगर किनारे पर खड़े रहनेवाले कभी तैरना भी नहीं सीख पाते।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

---

795. स्वामी की आज्ञा का अनिवार्य रूप से पालन करना परतंत्रता है, परंतु पिता की आज्ञा का स्वेच्छा से पालन करना पुत्रत्व का गौरव प्रदान करती है।

796. किसी भी स्वाभिमानी व्यक्ति के लिए सोने की बेडियां, लोहे की बेडियों से कम कठोर नहीं होंगी। चुभन धातु में नहीं वरन् बेडियों में होती है।

797. उड़ने की अपेक्षा जब हम झुकते हैं तब विवेक के अधिक निकट होते हैं।

798. गुणी मनुष्य अपनी प्रशंसा स्वयं नहीं करते, बल्कि दूसरों से अपनी प्रशंसा सुनकर नम्र हो जाते हैं।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

---

799. सज्जन पुरूष बादलों के समान देने के लिए ही कोई वस्तु ग्रहण करते है।

800. किताबें समय के महासागर में जलदीप की तरह रास्ता दिखाती हैं।

801. अत्याचार और अनाचार को सिर झुकाकर वे ही सहन करते है जिनमें नैतिकता और चरित्र का अभाव होता है।

802. जहां आदर और विश्वास मिलें वहां श्रध्दा उत्पन्न होती है।

803. अंतर विवेक, सदचिंतन एंव स्वाध्याय के द्वारा चंचल मन स्वयमेव शांत हो जाता है।

804. दुनिया को देखना बुरा नहीं है, उसके प्रति आसक्ति बनाना बुरा हैं।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

805. प्रेम की शक्ति दण्ड की शक्ति से हजार गुना प्रभावशाली और स्थाई होती है।

806. अपनी बुराइयां ढुंढने वाला व्यक्ति रण में विजयी योध्दा से भी अधिक वीर होता है।

807. यदि अंधकार से प्रकाश उत्पन्न हो सकता है तो द्वेश भी प्रेम में परिवर्तित हो सकता है।

808. अपने शत्रु के लिए अपनी भट्ठी को इतना गरम न करो कि वह तुम्हें ही भून कर रख दे।

809. पृथ्वी पर तीन रत्न हैं। जल, अन्न और मीठी वाणी लेकिन अज्ञानी पत्थर के टुकड़े को ही रत्न कहते हैं

सोच हटके, जियों डटके
संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

810. सबल मन, सहिष्णुता, समता एवं संयम का विकास चेतना को निर्मल बनाने में सहयोगी होते हैं।

811. इस संसार में प्रत्येक वस्तु की संकल्प शक्ति पर निर्भर है।

812. खोजे परगुण अपने दोष, सीमित साधन में संतोष।

813. ईश्वर की साझेदारी हर दृष्टि से नफे का सौदा है

814. मौन सर्वोत्तम भाषण है। अगर बोलना जरूरी हो तो भी कम से कम बोलो। एक शब्द से काम चले तो दो नहीं।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

815. अपने गुणकर्म व स्वभाव का विश्लेषण करना सबसे कठिन कार्य है।

816 जीवन उतना ही सार्थक है, जितना कि सदुद्येश्यों के लिए जिया जाता है।

817. मनुष्य अपना स्वामी नहीं परिस्थितियों का दास है।

818. मनुष्यता का एक पक्ष भी है जहां वर्ण, धर्म और देश को भूलकर मनुष्य, मनुष्य के लिए प्यार करता है।

819. जिन दोषो को हम दूसरों में देखते हैं, उन्हें अपने में न रहने दें, इसका ध्यान रखना चाहिए।

820. संतोष का वृक्ष कड़वा है लेकिन इस पर लगने वाला फल मीठा होता है।

सोच हटके जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

821. वस्तुयों द्वारा नहीं, नैतिकता के बल पर ही मनुष्यों और उनके कर्मो पर अधिकार प्राप्त किया जा सकता है।

822. वास्तविक शिक्षा तो तब शुरू होती है जब मनुष्य तमाम बाहरी सहायताओं से मुंह मोड़ कर अंतर के स्त्रोत की अग्रसर होता है।

823. उतम पुरूषो की संपति का मुख्य प्रयोजन यही है कि औरों की विपति का नाश हो।

824. जीवन के चार स्तंभ साधना, स्वाध्याय, संयम और सेवा। खोजे परगुण अपने दोष, सीमित साधन में संतोष।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

825. पुरूष है कुतूहल व प्रश्न और स्त्री है विश्लेशण,उतर और सब बातो का समाधान।

826. जब तक तुममें दूसरों के दोष देखने की आदत मौजुद है,तब तक ईश्वर का साक्षात्कार करना अत्यंत कठिन है।

827. मनुष्य का आचरण बताता है कि वह कुलीन है या, अकुलीन, वीर है या कायर अथवा पवित्र है या अपवित्र।

828. कुल प्रतिष्ठा भी विनम्रता और सद्व्यवहार से होती है, हेकडी और रूआब दिखाने से नहीं।

829. अपवित्र कल्पना उतनी ही बुरी होती हैं जितना बुरा अपवित्र कर्म।

830. भूतकाल की कोई कीमत नहीं, वर्तमान आपके हाथ में हैं।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

---

831. विनय के बिना संपत्ति क्या ? चंद्रमा के बिना रात क्या।

832. अपनी अहंकार पर विजय पाना ही प्रभू की सच्ची सेवा हैं।

833. हर सामर्थ्यवान इंसान को दीन–दुखियों की मदद करना चाहिए।

834. इंसान चाहे कितनी तरक्की कर ले उसे अपने पुराने दिन भूलना नहीं चाहिए।

835. कोई बुरा कर्म करके सुख चाहे, तो वह कैसे पाएगा। बबूल का वृक्ष लगाकार आम का फल कैसे मिलेगा।

836. समय के ऊपर कर्म कभी भी नही छोड़ना चाहिए, कर्म करे रहेंगे तो समय भी आपके अनुकूल रहेगा।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

---

837. कामयाबी की असली गुंजाइश किसी काम में नही होती बल्कि इंसान में होती है।

838. जिस तरह पहली बारिश में मौसम का मिजाज बदल देती है उसी प्रकार उदारता नाराजगी का मौसम बदल देती है।

839. सतत कियाशीलता ही ज्ञान प्राप्ति का एकमात्र मार्ग हैं।

840. जिंदगी आपके लिए तकलीफे तो खुद लाते रहेगी, यह आपका जिम्मा होता है कि आप अपने लिए आनंद जुटाएं।

841. धर्म करते हुए मर जाना अच्छा है पर पाप करते हुए विजय प्राप्त करना अच्छा नही।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग.)

---

842. चिंता शहद की मक्खी के समान है जिसे जितना हटाओ उतना ही चिपकती है।

843. अविश्वास आदमी की प्रवृत्ति को जितना बिगाड़ता हैं विश्वास उतना ही बनाता है।

844. प्राणों का मोह त्याग करना वीरता का रहस्य हैं।

885. मेहनत करने से दरिद्रता नही रहती, धर्म करने से पाप नही रहता, मौन रहने से कलह नही होता और जागते रहने से भय नही होता।

886. मौके कई बार बडे अजीब वक्त पर दरवाजा खटखटाते है वह वक्त मायने नही रखता बल्कि मायने यह रखता है कि अब दरवाजा कैसे खोलते है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

887. भूतकाल के अनुभव से समझदार व्यक्ति भविष्य का अनुमान लगा लेते है।

888. अचेतन के परिश्कार और परिमार्जन से ही गलतियों को रोका जा सकता है।

889. मुसीबत को पार करने का उत्तम रास्ता मुसीबतों सें होकर गुजरता है।

890. आप अपने लिए जो करते है, वह आपके साथ चला जाता है जो दूसरो के लिए करते है वह हमेंशा कायम रहता है।

891. कोई खिलाडी जेब मे पैसे भरकर नही दौड सकते, उनको दिल में उम्मीदें और दिमाग में सपने लेकर दौडना पडता है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

892. जो लोग नाकामयाबी की आशंका से डरे रहते है, वे कामयाब होने का हक भी नही रखते।

893. दोस्ती की हसरत रफतार से होती है और दोस्ती की फसल बहुत धीमें पकती है।

894. सच्चे इंसान के अंदर ही छिपा रहता है भगवान।

895. आत्महिनता अकारण ही मनुष्य को आलसी, असंतुष्ट, चापलूस और क्षुब्ध बना देती है।

896. लगन और योग्यता एक साथ मिले तो निश्चय ही एक अद्वितीय रचना का जन्म होता है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

---

897. बीते कल को न बदला जा सकता, न भुलाया जा सकता,न उसका कोई संपादन हो सकता है उसे सिर्फ मंजूर किया जा सकता है लेकिन आने वाले कल को बदला जा सकता है।

898. वस्तुओं द्वारा नहीं, नैतिकता के बल पर ही मनुष्यों और उनके कर्मो पर अधिकार प्राप्त किया जा सकता है।

899. मनुष्यता का एक पक्ष वह भी है जहां वर्ण, धर्म और देश को भूलकर मनुष्य, मनुष्य के लिए प्यार करता है।

900. पुष्प की सुगंध वायु के विपरीत कभी नहीं जाती लेकिन मानव के सद्‌गुण की महक सब ओर फैल जाती है।

901. मनुष्य जितना ज्ञान में घुल गया हो उतना ही कर्म के रंग में रंग जाता है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

902. केवल अंग्रेजी सीखने में जीतना श्रम करना पड़ता है उतने श्रम में भारत की सभी भाषाएँ सीखी जा सकती है।

903. जो मनुष्य एक पाठशाला खोलता है वह एक जेलखाना बंद करता हैं

904. पापकर्म ताजा दूध की तरह तुरंत ही विकार नहीं लाता, वह तो राख से ढकी अग्नि की तरह धीरे धीरे जलते हुए मूर्ख का पीछा करता रहता है।

905. सदाचार, विनम्र व्यवहार, सरलता एंव सज्जनता शील की निश्पति है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

906. लगन के बिना किसी में भी महान प्रतिभा पैदा नहीं हो सकती।

907. शिक्षा तो कभी भी मिल सकती है, पर विद्या के सूत्र कहीं कही मिलते है।

908. आतंक का जन्म असंतोष से होता है असमानता से इसे हवा मिलती है और यह अपनी आग में हजारों के लेकर जल मरता है।

909. सुअवसरों की ओर कदम बढ़ाना ही सफलता की सीढ़ी चढ़ने का उत्तम तरीका हैं।

910. ज्ञानदाता गुरु की निंदा करना तो दूर, निंदा सुननी भी नहीं चाहिए।

911. प्रकृति, समय और धैर्य ये तीन हर दर्द की दवा हैं।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

---

912. जिस प्रकार श्रम करने से शरीर मजबूत होता है, उसी प्रकार कठिनाईयों से जूझने से मस्तिष्क सुदृढ होता है।

913. प्रेम से बडा कोई हथियार नही है।

914. यदि बात तुम्हारे हृदय से उत्पन्न नही हुई है तो तुम दूसरो के हृदय को कदापि प्रसन्न नही कर सकते।

915. प्रसिद्ध होने का यह एक दंड है कि मनुष्य को निरंतर उन्नतिशील बने रहना पडता हैं।

916. इस संसार में प्यार करने लायक दो वस्तुएं है, एक दुख और दूसरा श्रम। दुख के बिना हृदय निर्मल नहीं होता और श्रम के बिना मनुष्यत्व का विकास नहीं होता।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

---

917. केवल प्रकाश का अभाव ही अंधकार नहीं, प्रकाश की अति भी मनुष्य की आखों के लिए अंधकार है।

918. धन तो वापस किया जा सकता है परंतु सहानुभूति के शब्द वे ऋण हैं जिसे चुकाना मनुष्य की शक्ति के बाहर हैं।

919. गुस्सा होना दूसरो की गलती का अपने से बदला लेना।

920. हर वर्ष एक बुरी आदत को मूल से खोदकर फेंका जाए तो कुछ ही वर्षो में बुरे से बुरा व्यक्ति भी भला हो सकता है।

921. धैर्यवान मनुष्य आत्मविश्वास की नौका पर सवार होकर आपत्ति की नदियों को सफलतापूर्वक पार कर जाते हैं।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

922. धन की पोटली जितनी खाली होती है हृदय उतना ही विशाल होता जाता है।

923. सुयोग्य पति पत्नी को सम्मान की अधिकारिणी बना देता है।

924. किसी के दुर्वचन कहने पर कोध न करना क्षमा कहलाता हैं।

925. चलते घोड़े को चाबुक नहीं मारना चाहिए। आशय यह है कि ठीक काम करने वाले को दोङ्ख नहीं लगाना चाहिए या उचित काम करने वाले को डांटना–फटकारना नहीं चाहिए।

926. चोर को चोरी करने के लिए पच्चीसों राहे मिल जाती है। जिस व्यक्ति को बुरा काम करना होता है वह अनेक रुकावटों के रहते भी कोई न कोई रास्ता खोज ही लेता हैं।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

927. गुड़ बनाने में मेहनत और समय लगता है। गुड़ खड़े गन्ने की खेत से नहीं निकलता। उसी प्रकार किसी काम के होने में समय और धैर्य की जरुरत होती हैं।

928. जिस घर के भीतर ही मनमुटाव हो, वह बाहरी मुश्किलों से नही लड़ सकता।

929. ख्याति वह प्यास है,जो अगस्त्य ऋषि की तरह सागर को पीकर भी शांत नही होती।

930. वही व्यक्ति धैर्यशाली और प्रशंसनीय है जो विपति में भी अपना स्वभाव नही छोडता।

931. वही संतुष्ट है जो अप्राप्त वस्तु के लिए चिंता नहीं करता।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

932. दुनिया एक आईने सी होती है और आपको वही देती है जो आप होते है।

933. विनम्रता दुनिया में सबसे ज्यादा पाया जाने वाला पसंद है।

934. ईश्वर से हम जितना संबंध जोडेगें, उतनी ही शक्ति हमें प्राप्त होगी।

935. जो मर गए हैं वे लौट कर नहीं आ सकते और जो रह गए हैं उनको भी एक दिन मरना है। संसार की क्षण भंगुरता पर कहा गया हैं।

936. जितना अधिक मोह बंधन होगा उतनी ही विपदाएं सिर उठाएंगी।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

937. साधन के अनुरुप ही कार्य भी होगा। अच्छा साधन होगा तो कार्य भी अच्छा होगा, बुरा साधन होगा तो कार्य भी बुरा होगा।

938. अनुभवहीन या मूर्ख की दोस्ती गधे की सवारी की तरह इज्जत खराब करने वाली होती है। मित्रता सम विचार वाले लोगों से करनी चाहिए।

939. जो पुण्य राजा को दान देने से मिलता है वही पुण्य प्रजा को केवल स्नान करने से ही मिल जाता है इस कहावत का प्रयोग सबको अपनी साम्थर्य के अनुसार देने पर कहा जाता हैं।

940. किसी के धन, यश, धर्म आदि के व्यर्थ में या किसी गलती के कारण गंवा देने पर उसे मुर्खता कहते हैं।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

941. कर्म वह आईना है जो हमें अपना स्वरुप दिखा देता हैं।

942. आत्मा के संतोङ्ख का ही दूसरा नाम स्वर्ग हैं।

943. जितना अधिक मोह बंधन होगा उतनी ही विपदाएं सिर उठाएंगी।

944. यह मानना कि मन ही सब कुछ है, विचार ही सब कुछ है केवल एक प्रकार का उच्चतर भौतिकवाद है।

945. पत्ती से हल्की रूई है और रूई से भी हल्का याचक। हवा इस डर से उसे नहीं उड़ाती कि कहीं उससे भी कुछ न मॉग ले।

946. ईश्वरीय न्याय की चक्की यद्यपि धीमी गति से चलती है तथापि चलती अवश्य है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

---

947. महिलाओं के श्रेष्ठ व साहसी कार्य सामने आकर नारी की सामर्थ्य और प्रतिभा को प्रमाणित कर रहे है।

948. हमेशा सबके कल्याण की बात सोचना चाहिए। तभी मानव जीवन की सफलता सार्थकता है।

949. हृदय में दया, स्वभाव में नम्रता और दान की प्रवृति से मनुष्य सद्गति को प्राप्त करता है।

950. आपति विपत्ति आने पर जो व्यक्ति घबराते नहीं है, वे मनुष्य ही पंडित बुद्धिवाले होते है।

951. मनुष्य का जीवन एक महानदी की भॉति है जो अपने बहाव द्वारा नवीन दिशाओं में राह बना लेती है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

952. राजनीति सज्जनों के लिए नहीं, यह धूर्तो की अंतिम शरणस्थली है।

953. हमारी समस्याएँ मनुष्य निर्मित है, इसलिए उसे मनुष्य ही सुलझा सकता है।

954. फूलों की सुगंध केवल हवा के प्रवाह की दिशा में ही फैलती है, लेकिन मनुष्य की अच्छाइयां सभी दिशाओं में फैलती हैं।

955. आपकी सफलता और खुशी आप में निहित है। खुश रहने की ठान लें तो आप व आपकी खुशी कठिनाइयों के खिलाफ अजेय बन जाएंगे।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

---

956. किसी एक विचार को अपने जीवन का लक्ष्य बनाओं।उसी के बारे में सोचो और काम करो, तुम पाओगे की सफलता तुम्हारी कदम चुम रहीं है।

957. थोड़ा सा अभ्यास बहुत सारे उपदेशों से बेहतर है।

958. दिमाग पैराशूटों की तरह होते है वे तभी काम करते है जब खुले होते है।

959. वही राष्ट सच्चा लोकतंत्रात्मक है जो अपनक कार्यो को बिना हस्तक्षेप के सुचारू और सकिय रूप से चलाता है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

---

960. सच्चे मित्र हीरो की तरह दुर्लभ है ,झूठे मित्र पतझड़ के पत्तों की तरह सर्वत्र मिलते हैं।

961. प्रजा के सुख में राजा को अपना सुख और प्रजा के हित में अपना हित समझना चाहिए आत्मप्रियता में राजा का हित नही, प्रजाप्रियता में ही राजा का हित हैं।

962. दुख एक आंतरिक भावात्मक धारणा है, वह अंतस से संबंधित एक रिक्त अनुभूति है।

963. विचारों से सुधरा हुआ मनुष्य देवता कहलाता है।

964. यह संसार कर्म की कसौटी है, यहां मनुष्य की पहचान इसके कर्मो से होती हैं।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

---

965. ज्ञान ही परम मित्र है और अज्ञान मनुष्य का परम शत्रु है।

966. सत्कर्म में परस्पर स्पर्धा करें परंतु ईर्ष्या नहीं।

967. कला विचार को मूर्ति में परिवर्तितकर देती है।

968. सबल मन, सहिष्णुता, समता एवं संयम का विकास चेतना को निर्मल बनाने में सहयोगी होते हैं।

969. इस संसार में प्रत्येक वस्तु संकल्प शक्ति पर निर्भर है। लक्ष्य निर्धारित कर परिश्रम करने से ईश्वर भी साथ देता है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

---

970. चरित्र से कभी न गिरना, गिरना तो महापुरूषों के श्रेष्ठ चरणों में।

971. अनाचारों का आक्रमण उन्हीं पर होता है, जो सज्जनता की आड़ में कायरता छुपाए रहते हैं।

972. परोपकार में लगे हुए लोगों के लिए कोई भी कार्य दुलर्भ नहीं होता।

973. संक्षेप ही प्रतिभा और बुद्धिमता की आत्मा है।

974. विचारों के युद्ध में पुस्तकें ही सबसे कारगर हथियार साबित होती है।

975. प्रसन्नता को हम जितना लुटाएगें उतनी ही अधिक वह हमारे पास आएगी।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

976. अपूर्ण ज्ञान प्राप्त करने की अपेक्षा अज्ञानता में विचरना श्रेष्ठ है।

977. जो आर्कषक और सुंदर है, वह सदैव श्रेष्ठ नहीं होता, किंतु जो श्रेष्ठ है, वह सदैव सुंदर होगा।

978. अगर हम स्वंय अपना राज गुप्त नही रख सकते तो किसी और से इसे गुप्त रखने की अपेक्षा कैसे कर सकते है।

979. अच्छे निर्णय ज्ञान पर आधरित होते है गणित की संख्याओं पर नहीं।

980. कप खाली हो तभी उसमें कुछ भरा जा सकता हैं। मन में जानने की इच्छा हो तभी कुछ सीखा जा सकता है।

981. सफलता छोटी–छोटी कोशिशों को मिलाकर ही बनती है, रात दिन उनको दुहराते हुए।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

---

982. परोपकार कभी व्यर्थ नहीं जाता।

983. कठिनाई और विरोध की मिटटी में ही शौर्य और आत्मविश्वास का विकास होता है।

984. जिसका हृदय झूठ से मुक्त है वह सबके हृदयों पर राज करेगा।

985. स्वंय डरा हुआ व्यक्ति दूसरों को भी डरा देता है।

986. सभी के साथ सौम्य और अपने लिए कठोर रहिए।

987. जीवन में प्रायः वे लोग सफल होते है जो शुरू से ही विपत्तियों से लोहा लेते हैं।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

988. संकट के समय धैर्य धारन करना ही मानों आधी लड़ाई जीत लेना।

989. मानव का शरीर एक दीपक के समान है।

990. मनुष्य अपनी इच्छानुसार कुछ भी नहीं कर सकता क्योंकि पराधीन होने के कारण वह असमर्थ है, काल उसे इधर–उधर खींचता रहता है।

991. झूठी शेखी बघारने वाले की अक्सर दुर्गती ही होती है।

992. जीवन में सहने का अभ्यास जरूरी हैं, जीवन की रक्षा के लिए सहना भी जरूरी हैं।

993. गुण की पुजा सर्वत्र होती हैं, बड़ी संपत्ति की नहीं।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

994. प्यार वह जादू है जो शत्रु को भी मित्र बना देता हैं।

995. कहो उसी से जो ना कहे किसी से, मांगों उसी से जो दे दे खुशी से।

996. अति किसी चीज की अच्छी नहीं होती, चाहे वह अच्छा हो या बुरा।

997. हमें सफलता पाने पर घमंड करने के बजाए और अधिक विनम्र बनना चाहिए।

998. सच्चे मित्र की उपेक्षा इंसान को गर्त में ले जाती हैं।

999. स्वार्थ की अनुकूलता और प्रतिकूलता से ही शत्रु व मित्र बना करते हैं।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

1000. शरीर आत्मा के रहने की जगह होने के कारण तीर्थ जैसा पवित्र हैं।

1001. धर्म, मोक्ष बेकार की बातें, अर्थ काम ही सब कुछ।

1002. ज्ञान को खोजते रहना मनुष्य का मूल स्वभाव हैं।

1003. कितना अंधा है वह व्यक्ति, जो धन से दूसरों का प्रेम खरीदना चाहता हैं।

1004. जो आपके करीब है उन्हें खुश रखें और जो आपसे दूर है वो एक दिन जरूर आपके करीब आएंगे।

1005. नम्रता सारे गुणों का दर्द स्तंभ है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

1006. थोडा सा अभ्यास बहुत सारे उपदेशों से बेहतर हैं।

1007. हर काम को तीन अवस्थाओं से गुजरना पड़ता हैः उपहास, विरोध और स्वीकृति।

1008. याद रखें की आप बहुत विशेष है, आपको मिला हुआ कार्य आप से अच्छा कोई नहीं कर सकता।

1009. पक्षपात, गुणों को दोष और दोष को गुण बना देता है।

1010. सत्य कभी ऐसे कारण को क्षति नहीं पहुंचता जो उचित हो।

1011. ईमानदार के लिए किसी छदम वेशभूषा या साज–श्रृंगार की आवश्यकता नहीं होती।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

1012. ज्ञान स्वंयमेव वर्तमान है, मनुष्य केवल उसका अविष्कार करता हैं।

1013. वहीं सबसे तेज चलता है, जो अकेला चलता है।

1014. जैसा कर्म किया वैसा फल मिला अर्थात काम के अनुसार ही फल मिलता हैं।

1015. एक दिन के पढ़ने से ही विद्या नहीं आ जाती। आशय यह है कि किसी भी कार्य की सफलता के लिए परिश्रम और समय की आवश्यकता है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

1016. सत्य बिना जनसर्मन के भी खड़ा रहता है, वह आत्मनिर्भर है।

1017. सेवक को तब परखें, जब काम न कर रहा हों।

1018. अपनी गलती को स्वीकारना झाड़ु लगाने के समान हैं।

1019. दुनिया में कोई हाथ से तो कोई तो गोद से खाली है, कोई खुश तो कोई गम में डुबा है, यही दुनिया का सच और आश्चर्य है।

1020. ज्यादा सोचविचार से जीवन प्राय नीरस हो जाता है। हमें अपना ज्यादा ध्यान कर्म करने में लगाना चाहिए।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

1021. जो दुसरों से ईर्श्या करता हैं उसे मन की शांति नहीं मिलती ।

1022. शिक्षा सबसे अच्छी मित्र है। शिक्षित व्यक्ति सदैव सम्मान पाता है।

1023. केवल बुद्धि के द्वारा ही मनुष्य का मनुष्यत्व प्रकट होता है।

1024. बुध्दिमान व्यक्ति कभी अपनी हानी पर शोक नहीं करते, बल्कि प्रसन्नतापूर्वक अपनी क्षति को पूरा करने का उपाय करते है।

1025. सुंदरता की खोज में हम चाहे संसार का चक्कर लगा आए, अगर वह हमारे अंदर नहीं है तो कहीं नहीं मिलेगी।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

1026. विपति में भी जिस हृदय में सद्ज्ञान उत्पन्न न हो, वह उस सूखे वृक्ष की तरह है जो पानी पाकर भी पनपता नहीं सड़ जाता है।

1027. कीमती इतने बनों की अमीर से अमीर भी आपकों खरीद ना सकें ।

1028. कभी–कभी पत्थर की ठोकर से नहीं आती खरोच और कभी जरा सी बात से इंसान बिखर जाता है।

1029. धैर्य व परिश्रम से हम वह प्राप्त कर सकते हैं, जो शक्ति व जल्दबाजी में नहीं।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

1030. लेना–देना तो व्यापार है, लेकिन जो देकर कुछ ना मांगें वह प्यार है।

1031. गरीबी दुख नहीं देती, पडोसी की अमीरी दुख दिया करती हैं।

1032. गरीब आदमी मंदिर के बाहर भीख मांगता है, अमीर आदमी मंदिर के अंदर भीख मांगता है।

1033. जन्म से नहीं बल्कि कर्म से ही मनुष्य शूद्र या ब्राम्हण होता है।

1034. पहले वे आपको नजर अंदाज करते हैं। उसके बाद वे आप पर हंसते हैं। फिर वे आप से लडते हैं और बाद आप जीत जाते है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

1035. ज्ञान की सार्थकता तब है, जब वह कर्म रुप में परिणीत हो।

1036. अपराधी मन संदेह का अड्डा है, चोर को हर झाड़ी में पुलिस का भय बना रहता है।

1037. प्रेम बोला नही जा सकता, बताय नही सकता, प्रेम चित्त से चित्त का अनुभव है।

1038. सफलता खुशी की कुंजी नहीं है खुशी सफलता की कुंजी है अगर आप अपने काम को दिल से करते है तो जरूर सफल होंगे।

1039. यदि स्वंय को गुणों से निखारना है तो खुद में गल्तियां ढूंढना सीखें।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

1040. दुनिया का सम्मान व सहयोग उनके लिए सुरक्षित है जो देते बहुत है पर बदले में पाने की अपेक्षा नही रखते।

1041. दुनिया में सबसे तेज रफतार प्रार्थना की है, क्योंकि दिल से जुबान तक पहुँचने से पहले भगवान तक पहुँच जाती है।

1042. जीतने वाले अलग काम नही करते अलग ढंग से करते है।

1043. निंदा करने से दूसरों का भार कर्मभार जीवात्मा पर आता है।

1044. परोपकार हर इंसान पर परम कर्तव्य है, किसी को इससे पीछे नहीं हटना चाहिए।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

1045. समाज में रहकर ही समाज की बुराईयों को दूर किया जा सकता हैं।

1046. बड़ो का आदर करना, उनकी बात मानना, उनको प्रणाम करना ही मर्यादा है।

1047. अतीत को कभी विस्म्रत न करों, अतीत का बोध हमें गलतीयों से बचाता है।

1048. विद्यार्थी, सेवक, यात्री और द्वारपाल यदि नियत समय से अधिक सोए तो उन्हे जगा देना चाहिए।

1049. जिस तरह अच्छे तौर तरीके बनाए रखने के लिए कानून जरूरी हैं, उसी तरह कानूनों के पालन के लिए अच्छे तौरतरीके जरूरी है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

1050. प्रजातंत्र का अर्थ प्रजा का, प्रजा के द्वारा, प्रजा के लिए शासन हैं।

1051. सच्चे मित्र उन्हीं को मिलते है जो दूसरों के दुख में दुखी होते और हाथ बटाते है।

1052. हमें सदा ध्यान रखना चाहिए कि शक्ति शाली से शक्ति शाली मनुष्य भी एक दिन कमजोर होता है और बुद्धिमान से बुद्धिमान व्यक्ति भी गलतियां करता है।

1053. व्यक्ति अपने विचारो से निर्मित प्राणी है, वह जो सोचता है वही बन जाता हैं।

1054. जीवन सौदंर्य से परिपूर्ण है इसे देखे महसूस करें पूरी तरह से जीए अपने सपने पूरे करे करने के लिए पूरी कोशिश करें।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

1055. गरीबों के समान विनम्र अमीर और अमीरों के समान उदार गरीब ईश्वर के प्रिय पात्र होते है।

1056. शरीर बल से प्राप्त सता मानवदेह की तरह क्षणभंगूर रहेगा जबकि आत्मबल से प्राप्त सता आत्मा की तरह अजर और अमर रहेगी।

1057. सच्चा गुरू वहां पहुचा देता है जहां शिष्य अपने पुरूषार्थ से कभी नहीं पहुंच सकता।

1058. श्रेष्ठ वहीं है जिसके हृदय में दया और धर्म बसते है जो अमृत वाणी बोलते है और जिनके नेत्र विनय से झुक जाते है ।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

1059. जहां प्रेम नही वहां शांति नही हो सकती, इसी तरह जहां पवित्रता नही वहां प्रेम नही हो सकता।

1060. जो व्यक्ति दूसरों के भेद तुम्हारे सामने प्रकट करे उसे गुप्त भेदो से कभी अवगत न होने दे क्योकि जो व्यवहार दूसरों के साथ कर रहा है वहीं तुम्हारे साथ भी करेगा।

1061. मन की प्रसन्नता से समस्त मानसिक और शारीरिक रोग दूर हो जाते है और दूर रहते हैं।

1062. हम छोटी–छोटी सफलताओं से हर्शोन्मत न हों और न असफलताओं को देख हिम्मत हारें।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

1063. कर्म वह आइना है जो हमारा स्वरूप हमें दिखा देता है। इसीलिए हमें कर्म का अहसानमंद होना चाहिए।

1064. नियमों का विधान मनुष्य के लिए किया गया है मनुष्य का निर्माण नियम के लिए नहीं हुआ है।

1065. विपरीत परिस्थितियां ही हमें जगाती है, और हमारी क्षमताओं को निखारती है. इसी समय पता चलता है कि हम कितने पानी में है।

1066. मातृभाव का अस्तित्व केवल आत्मा में और आत्म के द्वार ही होता है यह और किसी के सहारे टिक नही सकता।

1067. जो आदमी सत्य की हत्या करके फला हो,वह आदर्श नहीं, चरित्र की दुर्बलता हैं।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

1068. जब इंसान सबसे अच्छे होते है तो वे सबसे अच्छे किस्म के जानवर होते है लेकिन जब वे कानून और इंसाफ से परे चले जाते है वे सबसे बुरे जानवर रहते है।

1069. उजाला एक विश्वास है जो अंधेरे के किसी भी रूप के विरूद्ध सघंर्ष का बिगुल बजाने को तत्पर रहता है ये हममें साहस और निडरता भरता है।

1070. इस विश्व में धन गाय और धरती का दान देनेवाले सुलभ है लेकिन प्राणियों को अभयदान देने वाले दुर्लभ है।

1071. अवसर तो सभी को जिंदगी में मिलते है किंतु उनका सही वक्त पर सही तरीके से इस्तमाल कितने कर पाते हैं।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

1072. जहां प्रेम नही वहां शांति नही हो सकती, इसी तरह जहां पवित्रता नही वहां प्रेम नही हो सकता।

1073. मनुष्य मे दूसरो के प्रहार से बचने के लिए कठोर और कुटिल होने का गुण भी होना चाहिए।

1074. कुछ बातो को जानना और सभी बातो को समझना बेहतर होता है बजाए हर बात को जानने और किसी भी बात को न समझने के।

1075. आवश्यकताओं के लिए धन कमाना अच्छा है अधिक धन की भूख मनुष्य को नीचे गिराती है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

1076. जिस मनुष्य में स्वयं का विवेक चेतना एवं बोध नहीं है उसके लिए शास्त्र कुछ नहीं कर सकता अर्थात् अंधे मनुष्य के लिए दर्पण क्या कर सकता है।

1077. धनी से सब जलते हैं और निर्धनों से सहानुभूति रखते हैं। संसार की अधिकांश आबादी गरीब है, इसलिए मुटठीभर अमीरो से वह घृणा करती है।

1078. बिना निराश हुए हार को स्वीकारना साहस की सबसे बड़ी जीत होती है ।

1079. जिस तरह घोंसला सोती हुई चिड़िया को आश्रय देता है उसी तरह मौन तुम्हारी वाणी को आश्रय देता हैं।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

1080. व्यक्ति के आचार–विचार से उसके संस्कार का भान होता हैं।

1081. जो कर्ज आप पर है, उसे चुकाने पर ही पता चलेगा कि आपके पास अपना क्या हैं।

1082. मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि एक निष्ठता के सिद्धांत पर चलने वालों को अधिक तकलीफ नहीं होती।

1083. आय से कम में निर्वाह करने की कला जानते हो तो समझो पारस पत्थर तुम्हारे पास हैं।

1084. प्रसन्न्ता कोई पहले से निर्मित वस्तु नही है वो आपके कर्मो से आती है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

1085. जीवन में अत्यधिक लालच भी छूत के बीमारी के समान है।

1086. जीवन में आदर्शो की पूंजी रखने वाला कभी दरिद्र नही होता।

1087. डर सदैव अज्ञान से पैदा होता है।

1088. जब तक तुम्हारे पास कहने के लिए कुछ खास न होए, तब तक किसी से कुछ न कहो।

1089. अपने पैरो पर खडे रहते हुए मरना, घुटने टेक कर जीने से कही बेहतर है।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

1090. कोरी विद्वता नहीं, बल्कि उसे उपयोग में लाने का नाम ही ज्ञान हैं।

1091. जिंदगी में हर दौर से गुजरना पडता है।

1092. सिर्फ सकारात्मक इरादा किसी भी जादुई औषधि से कही ज्यादा चमत्कारिक हैं।

1093. सीखने का एक बेहतरीन तरीका है, प्रश्न पूछना और फिर धैर्यपूर्वक उसका उत्तर सुनना।

1094. यदि आप चाहते हैं कि लोग आपके साथ सच्चा व्यवहार करें तो आप खुद सच्चे बनें और अन्य लोगों से भी सच्चा व्यवहार करें।

सोच हटके, जियों डटके

संकलनः डॉ. अजय गुप्ता दुर्ग.(छ.ग)

1095. धैर्य और परिश्रम से हम वह प्राप्त कर सकते है जो शक्ति व जल्दबादी से नहीं।

1096. निरंतर सफलता हमें जीवन का एक ही पहलू दिखाती है पर विपत्ती दूसरा पहलू भी।

1097. मधुर वाणी मनुष्य का ऐसा आभूषण है जो अन्य आभूषणों की तरह घिसता नहीं हैं।

अंत में.....

किसी पुस्तक को प्रकाशित करना एक लड़की की शादी करने के समान होता है जैसे लड़की पैदा होती है ठीक उसी तरह लेखक के मन में पुस्तक के लिए विचार उत्पन्न होते है, जैसे लड़की को पढ़ाया, लिखाया, सजाया व संवारा जाता है। पुस्तक को भी अलग-अलग ढंग से सजाया संवारा जाता है, और जब लड़की की शादी होती है और उसे विदा किया जाता है तो पिता की ऑखे नम होती है यह शादी ठीक होने की खुशी भी रहती है। उसी तरह लेखक के मन में एक खुशी होती है व अब अपनी पुस्तक को विदा कर अर्थात प्रकाशित कर रहा है जैसे पिता अपनी पुत्री को विदा देता है कि वह ससुराल में सबका ख्याल रखे वहां खुशियॉ

बाँटे ठीक उसी तरह एक अच्छा लेखक चाहता है कि उसकी पुस्तक लोगो तक पहुँचे व उसके जीवन में ज्ञान व खुशियाँ लाएं।

वैसे तो मेरा यह प्रयास रहा है कि इस ई-बुक में कोई त्रूटि ना हो फिर भी कोई गलती होने पर मेरी कोई जवाबदारी नहीं होगी। मै यह भी नही चाहता कि इस पुस्तक में कोई विवाद हो, अगर विवाद होगा तो जिला न्यायालय, दुर्ग छ.ग. भारत में इसका निवारवण किया जायेगा, वैसे इस पुस्तक को पढने के बाद इससे विवाद की आपकी सभी भावना समाप्त हो जायेगी और आपके दिमाग में सकारात्मक विचार उत्पन्न होगे।

मैं सभी पाठको से अनुरोध करूंगा कि वह रोज एक अनमोल वचन को पढ़े समझे व उस दिन व उसके बाद हमेंशा अमल में लाएं आप देखेगें कि कुछ दिनों में आपके जीवन में आश्चर्यजनक

परिवर्तन होने लगा है और आप एक अच्छे इंसान बनने लगेगें और मैं भी तो यही चाहता हूँ.....

अंत में हम ई बुक के प्रकाशन से जुड़े प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सभी लोगो को मैं धन्यवाद देता हूँ।

जय मानवता,

डॉ. अजय गुप्ता,

THANK YOU